

विवावर जैन

सम्पादक-मूलचंद्र किसनदास कापड़िया चंदावाड़ी-सुरत ।

विषयानुक्रमणिका ।

नं०	विषय	पृष्ठ
१-२	दशलक्षण धर्म; सम्पादकीय विचार	१-३
३	भगवान महावीर पर सम्मति	५
४	जैन समाचार संग्रह	४
५	पर्यूषण पर्व व स्वार्थमय विचार (पं० दीपचंद्रनी वर्णी)	९
६	वर्तमानकाल और जैनधर्मकी आवश्यकता	१३
७-८	उपलंभ (कविता); कपुर ("जयःजी प्रताप")	१८-१९
९-१०	जैन समाज; पर्यूषण पर्व (कविताएं)	२०
११	नीति रत्नमाला (बालमिश्रन जैन पारम)	२१
१२	वीसा मेवाड़ा दि० जैन युवक मंडल	२४
१३-४	उत्तम त्रय गुण; उत्तम उपदेश	२६-२९
१५-१६	अहिंसा; समयोपयोगी शिक्षायें	३०-३१

वीर सं. २४५०
भाद्रपद
वि. सं. १९८०

वर्ष १७ वं
अङ्क ११वाँ
सन् १९२४.

पेशमी वार्षिक मूल्य रु० २-०-० पोष्टेज सहित ।



प्रांतीय ओडिग बालु छे-प्रतिष्ठ (अभद्रावाङ्मनी श्रियं प्रसागर दि० जैन ओडिगना मंत्री मगनलाल देवयंढ प्रगट करे छे के आ ओडिग पक्ष थरानी अक्षरा ओटी छे. ओडिग तो बालुज के. ने भाष्योअे पोताना छेकरोअेने अन्वयासाथ भोक्षता होय तो पुशीयी भेक्षे ने दाम्पत्य थवानुं शर्म भरी भोक्षी ते पास थयेथी डिपोजिट ३० २) तथा वषिक पेछी ५ ही ४१) अथवा डाइ पेछी ५ ही २५) पैडी अडधी रकम पक्ष भोक्षे. वणी विद्यार्थीअे थाणी, चाटनी, भोरो ने पवालुं अे थार वासथु लाववा जेछेअे.

इतेपुर-मां आरथ सुदी १५ ने दिने रक्षाअधन पूजन थप कथा संभणवराभां आरी छती तथा आविकाअम सुंआधथी रक्षा (राभडी) आवेक्षी त्यां १७) दानना भोक्षलाव्या छे.

भारत शासनसुधार-जां व कमेटीकी ओरसे कई नेताओंकी गवाही ली जा रही है उसमें हमारे जैन कौमके हकोंकी रक्षा हो इस लिये जैन अगुओंकी गवाही भी लेनी चाहिये ऐसा एक पत्र 'जैनमित्र मंडल' देहलीने रिफार्म शोधन कमेटी शिमलाको भेजा है उसमें लिखा है कि जैनोंकी ओरसे बा० जुगमंदरलाल बेरिस्टर व जन, बा० चंतरायजी बेरिस्टा, बा० अजितप्रसादजी वकील, बा० टेकचंदनी, स्था० जंदिवाला तथा रा० व० लड्डे एम०ए वेरगा-मकी भी गवाही अवश्य लेनी चाहिये।

सागर-में लक्ष्मणदासजी, रज्जीलालजी व सुखलालजी कमरया द्वारा निर्मापित छात्रालयका उद्घटन समारंभ विजयादशमीको होगा।

हीराबाग-धर्मशाला मुंबाईनो जुलाईमां कुले १२९१ ने आगस्टमां ८ १ मुसाफरोए काम लीघो हतो ज्यारे ऐलक पत्रालाल दवा खानानो ४५९२ अने ४७१७ नवाजुना दर्दीओए लाभ लीघो हतो.

"वीर"-नामक पक्षिक (हरएक पंद्र दिनमें प्रकट होनेवाला) पत्र जो विजनौरसे भारत० दि० जैन परिषदसे उत्तमतया प्रकट हो रहा है उसके ग्राहकोंको वार्षिक मूल्य सिर्फ १॥) में तो १०० पृष्ठका सचित्र विशेषांक तथा 'असहमतसंगम' नामक ५९० पृष्ठका ग्रन्थ उपहारमें मिलता है। इस लिये 'दिगम्बर जैन'के हरएक ग्राहक वार्षिक मूल्य २॥) देकर वीरके ग्राहक अवश्य हो जावे क्योंकि खास अंक व ग्रंथ ही २॥) के हैं।

इन्दौर-में तिलोकचंद जैन हाईस्कूलका वार्षिक पारितोषिक विरणोत्सव तथा दानवीर राज्यभूषण रा० व० सेठ कल्याणमलजीकी वर्ष-गांठका उत्सव गत ता० १३ अगस्तको बहुत धूमधामसे इन्दौर स्टेटके डेप्युटी प्राईममिनिस्टर एत्मादौलके सभापतित्वमें हुआ था।

उदयपुरकी-प्रे० मो० दि० जैन पाठशा-लाका कार्य प्रशंसनीय चल रहा है। अभी ब० कन्हैयालालजीने छ मासिक परिक्षा लेकर अतीव संतोष प्रकट किया है। १०४ विद्यार्थी पढ़ते हैं। मंत्री सेठ वक्ष्मीचंदनीका परिश्रम सराहनीय है।

कलकत्ता-में 'विमलनाथ पुराण'के फोर्मकी चोरीका केस खारीन होजानेकी गतांक्रममें दीहुई खबरमें इतना विशेष है कि सिर्फ हनुमान प्रेमके कंपोजिटरसे ५०) का मुचलका लिया गया है व ५० श्रीलालनी तथा उनका कंपोजि-टर निर्दोष छूट गये हैं।

ब्र० हेमसागरजी-(करमसद)ए सिर-साला (खानदेश) मां चातुर्मास कर्यो छे.

॥ भीवीतरागाय नमः ॥

❀ दिगंबर जैन. ❀

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।

संबोधयत्यत्रमिदं प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन-समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १७ वाँ.

वीर संवत् २४५०. भाद्रपद वि० सं० १९८०.

अंक ११ वाँ

❀ दशलक्षणधर्म । ❀

पितासम सर्व जीवोंकी, करे रक्षा धरम कहते ।
इसीसे आसरा लीजे, इसी शुभ धर्मको कहते ॥
सभी कहते धरम करिए, धरम करना नहीं जानें ।
कि जैसे शुद्ध, जल मिश्रित, दुई लग दूध कहलाने ॥
परंतु पीयकर अनुभव, करेंगे आप जब उनका ।
तभी तो जान जावेंगे, कि जिससे होयगा खटका ॥
इसी ही दूध सम है तो, धरम सांचा अरु झूठा ।
तभी तो जानकर करना, कि जिससे कोई ना रूठा ॥
इसीसे आज हम सबको, बताते इम धरम दशको ।
कि जिससे होत है भारी, हमारी उन्नती प्यारी ॥
प्रथम क्षमा, मार्दव, आर्जव, उर सत्य शौचका करो विचार ।
संयम तप अरु त्याग अकिञ्चन, ब्रह्मचार जानों सुखकार ॥

१-उत्तम क्षमा ।

कोई क्रुद्ध होकरके भाई, अपना जो अपकार करे ।
शांतभावसे उसको सहलो, तभी क्षमावत धर्म धरे ॥
मैत्रीभाव जगतमें होगा, जिसके कारण सबसे अत्र ।
अन्तर बाहर शत्रु न कोई, सभी करें व्यवहार पवित्र ॥

२-उत्तम मार्दव ।

मान कषायको दूर भगाकर मृदुता धारण कर लीजे ।
जिससे फैले बेल दयाकी चितमें मार्दव धर लीजे ॥

३-उत्तम आर्जव ।

दुष्ट बुद्धिको दूर भगाकर माया जाल हटा दीजे ।
जिससे आर्जव धर्म प्रगट हो, तिरिय योनिका बंध भजे (ने) ॥

४-उत्तम सत्य ।

सदा सत्य प्यारा ही बोलो, झूठ बचन तुम तज दीजे ।
जिससे सत्य धर्मका पालन-होवे, सत्से हृदय सजे ॥

५-उत्तम शौच ।

अगनी जैसे ईंधन पाकर, अपना वेग बढ़ा लेवे ।
तैसे तैसे लोभ पदारथ सुख, गुण, व्रत शम हरलेवे ॥
लोभ पापका बाप कहाता इसको शीघ्रहि वश करले ।
तृष्णा छोड़ लोभको जीतो, जिससे शुचिता धर्म पले ॥

६-उत्तम संयम ।

पंचेन्द्रियके विषय छोड़कर मन बच तनसे रक्षा कर ॥
संयम धर्म धरो रुचिसेती पंच समितिका पालन कर ॥

७-उत्तम तप ।

बारह विधिके तपके भाई, बाह्याभ्यन्तर भेद किए ।
शक्त्यनुसार सभीको पालो, दुर्गति मारण दूर किए ॥

८-उत्तम त्याग ।

चार दान विख्यात जगतमें संघ चारको दे दीजे ।
जो है अमृतसम सुखकारी जिससे सब ही रोग नशे ॥

९-उत्तम आर्किंचन ।

जन्म मरणके नाश करनकी इच्छासे सब तज दीजे ।
परिग्रह चेतन और अचेतन जिससे चेतन धर्म सजे ॥

१०-उत्तम ब्रह्मचर्य ।

ब्रह्म शब्दका अर्थ आत्मा जिसमें चर्या कर लीजे ।
किसीपै खोटी दृष्टि न करके मातृ बहिन सम समभोजे ॥
शील रखनको महिमा भारो, जैन शास्त्रमें गाई है ।
इससे शील कभी ना छोड़ो, ताबिन व्रत नश जाई है ॥

दामोदरदास जैन, चंदावाड़ी-सुरत ।



हमारे दशलाक्षणी पर्व अभी चल रहे हैं और उसका अंतिम पर-
अनन्त चतुर्दशीका मोत्तम श्री अनन्तचतुर्द-
कर्तव्य । शीका दिन निकट ही
है जिस दिनको हमें किस
तरह विताना चाहिये उसकी नीचे लिखी कुछ
सूचनाएं हम फिरसे हमारे पाठकोंको करना
उचित समझते हैं ।

१-अनन्त चतुर्दशीके दिन दशलाक्षण,
षोडशकारण, रत्नत्रय और अनन्तव्रत ऐसे चार
व्रत एक ही दिनमें आते हैं तथा यह हमारे
पुण्य पर्वका अंतिम दिन है इसलिये इस
दिनको हमें अपूर्व धर्मध्यान पूर्वक विताना
चाहिये जिसमें-

२-हरएकको इस दिन तो धर्मध्यान पूर्वक
अवश्य उपवास करना चाहिये ।

३-काम घंदा बन्द करके सारा दिन मंदिरमें
ही पूजा पाठ स्वाध्याय तथा धर्म चर्चामें ही
बितावें ।

४-अपने ग्राम व शहरमें जीव हिंसा बन्द
हो व कसाईखाने बन्द रहे तथा काम घन्दा
सार्वजनिक रीतिसे बन्द रहे ऐसा प्रयत्न करना
चाहिये । अपनको खुद तो व्यापार घंदा बंद
रखना ही चाहिये ।

५-सामायिक प्रतिक्रमण आज तो त्रिकाल
अथवा दो काल अवश्य करना चाहिये ।

६-सभी व्रतोंकी पूजा तथा पंच पूजा आदि
शांतिके सार्थ पढ़नी व करनी चाहिये ।

७-जहांतक हो यह सारा दिन मंदिरमें ही
बिताना चाहिये ।

८-यह अवकाश व धर्मध्यानका दिन है इस
लिये हरएक मंदिरके शास्त्र भंडारकी सूची इसी
अवसर पर बना लेनी चाहिये व सर्व कोईको
स्वाध्यायार्थ शास्त्र सुगमतासे मिल सके ऐसी
व्यवस्थापूर्वक शास्त्र रखने चाहिये ।

९-हरएक शास्त्रके वेष्टन रेशमी (अशुद्ध)
अथवा पुराने हो तो बदल करके विशुद्ध खदरके
पीले वेष्टन बनाकर उसमें ही हमारे परमपवित्र
शास्त्र बांधने चाहिये ।

१०-जो २ शास्त्र अपने २ मंदिरमें न हों
वे अपने अथवा मंदिरके भंडारके द्रव्यसे अवश्य
मगानेका निश्चय करके उसका ओर्डर लिख देना
चाहिये । (हरएक शास्त्र सूरतके दि० जैन
पुस्तकालयसे मिल सकता है ।)

११-शास्त्र सभाओंके उपरांत एक व्याख्यान
सभा होनी चाहिये जिसमें दशलाक्षणी पर्व
पर विद्वानोंके आम व्याख्यान होने चाहिये ।

१२-मंदिरका हिसाब किताब लेन देन भी
ठीक कर लेना चाहिये तथा " तीर्थरक्षा
फंड " का प्रतिघर १) अपने २ मंदिरके
भाइयोंसे उगाह करके जितने रु० इकट्ठे हो वे
रुपये महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग बम्ब-
ईको मनिओर्डरसे भेजने चाहिये ।

१३-चतुर्दशीके दिन मंदिरोंके भीतर व
बाहर सजावट करनी चाहिये तथा एक धार्मिक
जुलूस निकालना चाहिये जैसा कि बम्बईमें
प्रतिवर्ष निकलता है । सारांश कि इस दिनको

इस तरह बिताना चाहिये कि सब आम वर्गको मालूम होजावे कि आज जैनोंका कोई बड़ा भारी दिन है ।

१४—चतुर्दशीकी सार्वजनिक छुट्टी हो इसके लिये सभाकर ऐसा प्रस्ताव करके अपने ग्राम व शहरके अधिकारियोंको उसकी नकल भेजनी चाहिये ।

१५—चतुर्विध दानका एक चंदा सब भाई-ओमें घूमकर करना चाहिये और जितने रुपये इकट्ठे हो वे हिस्ता करके हमारी संस्थाओं जैसी कि काशी स्या० विद्यालय, जयपुर ऋषभ ब्र० आश्रम, ब्यावर महाविद्यालय, बड़नगर औष-धालय—अनाथालय, देहली अनाथालय व महि-लाश्रम, बम्बई श्राविकाश्रम, सागर विद्यालय, मोरेना सिद्धांत विद्यालय, उदयपुर पार्श्वनाथ वि०, करंजा ब्र० आश्रम आदिमें तुर्त ही मनि-ओर्डर करके भिजवा देने चाहिये । यह चंदा चतुर्दशीके दिन बहुत सुगमतासे हो सकेगा ।

इस प्रकार इस अनंत चतुर्दशीको जितना भी बन सके तन मन धनसे अतीव धर्मध्यान पूर्वक निर्गमन करना चाहिये तथा यथाशक्ति व्रत नियम भी लेने चाहिये जिसमें हरएकको नित्य स्वाध्याय व दर्शनकी प्रतिज्ञा तो अवश्य ले लेनी चाहिये ।

* * *

हमारे अनेक स्थानोंपर हमारी वस्ती न होनेसे या कम होजानेसे मंदिर व प्रतिमा अनेक मंदिर जीर्णवस्थामें रक्षाका उपाय । पडे हैं तथा प्रतिमाओंकी अविनय हो रही है जिसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है परंतु

अनेक स्थानपर प्रमाद तो क्या द्रव्याभावसे ही यह कार्य नहीं होता है इसके लिये क्या उपाय करने चाहिये ऐसा एक लेख तीर्थभक्त शिरोमणि ला० देवीसहायजी फिरोजपुरने प्रकट किया था उसका एक उत्तम उपाय हमारे दक्षि-णके धर्मप्रेमी विद्वान वकील श्रीयुत जयकुमार देवीदास चवरेने प्रकट किया है जिसको हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटीने भी पसंद किया है वह यह है कि—

भारतवर्षमें हमारे जितने मंदिर हैं जिनकी वार्षिक आमदनी दो हजार या इससे ज्यादा हो उन मंदिरोंसे सौर दौ२सौ रूपय वार्षिक सहायता समाजके जीर्ण मंदिरोद्धार और प्रतिमाओंकी अविनयको दूर करानेके लिये लिया जाय ।

यह उपाय बहुत ही योग्य है । इसमें खुद तो द्रव्य देनेका है ही नहीं परन्तु अपना जीव उदार करके यदि अपने मंदिरमें (२०००) वार्षिकसे ज्यादाह आमदनी हो तो उसमेंसे (१००), या (१००) वार्षिक जीर्ण मंदिरोद्धार व प्रतिमाकी अविनयको बचानेको देनेके लिये अलग २ निकाल रखने चाहिये व जहां १ आवश्यकता हो भेजने चाहिये । ऐसा ही उपाय हमारे बंबईके श्वेतान्वर भाइयोंने कार्यमें परिणित कर दिया है अर्थात् बम्बईके ७ मंदिर व पेढ-योसे (४९०००) वार्षिक ६ वर्षतक अपने मालवा व मेवाड प्रांतके जीर्ण मंदिरोंके उद्धारार्थ देना निश्चय किया है व उसका कार्य भी प्रारम्भ होगया है । क्या दिगंबरी माई इस उत्तम

उपायका अनुकरण इस दशलक्षणी पर्वमें पंचायती करके करेंगे ?

* * *

आगामी १८ वें वर्षके प्रारम्भमें भी 'दिगम्बर जैन' का सचित्र "दिगम्बर जैन" का विशेषांक हम प्रकट विशेषांक व करना चाहते हैं इसलिये मूल्य । इस अंकमें प्रकट होनेके लेख व चित्र जिन २ को

भेजने हों उनको तथा हमारे विद्वान लेखकोंको एक मासके भीतर भेजनेके लिये हम सादर आमंत्रण करते हैं। हिंदी, गुजराती, मराठी, संस्कृत तथा अंगरेजी भाषाके लेख व कविताएं प्रकट होंगी जिसमें अंगरेजी, संस्कृत, मराठी बहुत कम व हिंदी, गुजराती भाषाके लेख विशेष रहेंगे। नवीन वर्ष वीर सं० २४९१ का हमारा सचित्र जैनतिथिदर्पण ग्राहकोंको समयपर मिल सके इसलिये आगामी आश्विनके अंकके साथ ही सब ग्राहकोंको तैयार करके भेज दिया जायगा।

सभी ग्राहकोंसे वीर सं० २४४९-९० विक्रम सं० १९७९-८० वर्ष १६-१७ अर्थात् दो वर्षका मूल्य वसूल करनेका है और दो वर्षके दो उपहार ग्रंथ भी देनेके हैं वे तैयार हो रहे हैं और एक माहके भीतर उनकी ३॥ (=) की वी० पी० सब ग्राहकोंको भेजी जायगी।

जो १९८० में ग्राहक हुए हैं उनको १९८० का ही उपहार भेजा जायगा। तथा जिसका मूल्य आया होगा उनको बुकपेकेटसे ग्रंथ भेजे जायेंगे। दो अलग ग्रंथ भेंटमें अवश्य दिये जायेंगे यह निःसंशय है। ग्राहकगण धैर्य रखें।

भगवान महावीर पर सम्मति ।

भगवान महावीर ।

लेखक-बाबू कामताप्रसाद जैन, सम्पादक 'वीर' अलीगंज एटा, प्रकाशक-मूलचंद किसनदासजी कापड़िया मालिक, दिगम्बर जैन पुस्तकालय सुरत। एष्ट संख्या ३०० प्रकाशकसे प्राप्य। मूल्य सादी जिल्द १॥॥ पक्की जिल्द २)

आजकलका शिक्षित संसार जितना भगवान् गौतमबुद्धके नामसे परिचित है उतना भगवान् महावीरके नामसे नहीं है। आजकलके ऐतिहासिकोंमें अहिंसाके सिद्धांत तथा रक्तमय यज्ञोंके बन्द करानेका श्रेय गौतमबुद्धको ही प्राप्त है, किन्तु उन लोगोंकी दृष्टि भगवान् महावीरकी ओर नहीं गई है। गौतमबुद्धने मृतकका मांस खानेका विधान किया है किन्तु भगवान् महावीरने मांस तो मांस मुहूर्तके रखे हुए मक्खनको भी खानेका निषेध किया है। आजकलके शिक्षितोंमें भगवान् महावीरका नाम प्रगट न होनेका कारण उनके अनुयायी जैनियोंकी संकुचित दृष्ट्यता है अन्यथा भगवान् महावीर ऐसे समाज सुधारक, तथा देश सुधारकके नामका महत्त्व आजकल किसीसे छिपा न होता।

हमने अभीतक कई 'महावीरचरित्र' देखे हैं, किन्तु यह सबमें अच्छा ही नहीं प्रत्युत अपने हंगका निराला है। यह पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टिसे इस प्रकार लिखी गई है कि जैनधर्म सम्बन्धी अनेक बातोंका साधारण ज्ञान हो जाता है। पुस्तकमें जैन दर्शनका संक्षेप भी दिया हुआ है। ग्रन्थके देखनेसे विदित होता है कि लेखक आधुनिक ऐतिहासिक आविष्कारों तथा

कराया गया है ।

पाठकोंको उक्त पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये व इसकी प्रति मंगाकर अजैन भाइयोंको वितरण करनी च हिए जिससे उनका भ्रम दूर हो और भगवानके पवित्र जीवनको समझे । स्व० देवेन्द्रप्रसादको यह पुस्तक समर्पण की गई है अतएव उनके प्रेमी जेनेतर विद्वानोंको भेटमें भेजनी चाहिये ।

“जैनमहिलादर्श” (सुरत) वर्ष ३ अंक ६ वां

अंतरीक्षजीके फौजदारी केसमें हमारी जीत—गत अप्रैल मासमें श्वेतांबर समाजने दि० समाज पर यह फौजदारी केस वासीमकी कोर्टके मांडा था कि दिगंबरीने मूर्तिका कंदोरा घिसकर निकाल दिया जिससे श्वेतांबर समाजकी धार्मिक लगनको दुखाया है । यह मामला अभीतक चलकर ता० २९ अगस्तको फैसला हुआ है उसमें दिगम्बरी निर्दोष ठहराये गये व मुकद्दमा दायर करनेवाले श्वे० मुनीम चतुर्भुजको (१००) जुर्माना हुआ है । इस केसमें हमारे दो वकील—जयकुमार देवीदास चवरे व मनोहर बापुजी महाननने बिना फीस लिये पैरवी की थी जिसके लिये वे अपार धन्यवादके पात्र हैं । हरएक तीर्थ केसमें दिगम्बर ही वकील होने चाहिये ।

मुक्तागिरि—क्षेत्रके संबन्धमें खापडेंने बेतूल व होशंगाबाद कोर्टमें मुकद्दमा चलाया था वह खारिज हो गया जिसकी उन्होंने नागपुर हाईकोर्टमें अपील की है । अपीलमें मुकद्दमा फिरसे चलानेको कहा गया है ।



बडवानी—में श्री बावनगजाजीकी छत्रीका काम चालू है । करीब २९ फूट उंचा काम बन चुका है । इसमें सेठ रोडमल मेघराजजीका परिश्रम सराहनीय है ।

ललितपुर—में भादों वदी १३को त्यागी शिवप्रसादजीने क्षेत्रपालकी पाठशालाके विद्यार्थी व पं० शीलचन्दजीका यज्ञोपवीत संस्कार कराया था । फिर शहरमें सब भोजनार्थ गये थे तो पांच धर्मात्माओंने भोजन कराया था ।

लाडनू—में बालकोंकी वचनशक्ति बढ़ानेके लिये दि० जैन वाग्बुद्धिनी बाल सभा स्थापित हुई है ।

फलटन—स्टेटने हुकम निकाला है कि कृषि व दुधेले जनावरोंकी कमीके कारण कोई भी कसाईके दलालको ऐसे जानवर न वेचें । ऐसा लेने व वेचनेवालोंको २९) दंड अथवा छ माह केद होगी । गह हुकम छ माहके लिये अभी जरी हो चुका है ।

समडोली—में मुनि श्री शांतिसागरजी (दक्षिण) के चातुर्माससे वहां चतुर्थकाल जैसा दृश्य हो रहा है । वहां <—१० तो क्षुल्लक त्यागी व ब्रह्मचारी साथमें हैं तथा सेठ रावजी सखाराम सोलापुर, पं० बंशीधरजी आदि भी पर्युषणपर्वमें वहां गये हैं ।

सुजानगढ—में नित्य धर्मध्यान पूर्वक त्रिकाल पूजन होता है जैसा अभी कहीं भी सुननेमें नहीं आया ।

इन्दौर—में मुनि श्री शांतिसागरजीके चातु-
र्माससे त्यागी व्रती पंडितोंका अच्छा समागम
हो गया है । इस पर्वमें पं० लक्ष्मीचन्द्रजी
लश्कर व न्यायाचार्य पं० माणिकचंद्रजी भी
धर्म प्रभावनार्थ पधारे हैं ।

नागपुर प्रान्ति—खंडेलवाल सभाका ९
वां अधिवेशन कार्तिक वदी १-४-९को राम
टेकमें होगा। स्वागतसमिति भी बन चुकी है ।

केशरिघाजी—की पाठशालाकी परीक्षा
ता० ४ अगस्तको पंच द्वारा लीगई तब ७७
मेंसे ६१ विद्यार्थी उपस्थित थे जिनमेंसे ३०
ही पास हुए । विद्यार्थी विशेष हैं व अध्यापक
बहुत कम है उसमें तो वह विचारा १९ बालि-
काओंको भी पढाता है । इसलिये एक विशेष
अध्यापक व अध्यापिकाकी आवश्यकता है
परन्तु द्रव्याभावसे वैसा नहीं हो सकता इसपर
तीर्थक्षेत्र कमेटी व समाजको ध्यान देना चाहिये ।

भट्टारकका चिन्मोग—जैन कांचीमठ
(दक्षिण)के भट्टारक श्री लक्ष्मीसेनजीका गत
ता० ३ जुलाईको अकस्मात् स्वर्गवास हो गया।
प्राचीन स्मारकके आप बड़े प्रेमी थे । अपने
निवास स्थान चित्तपुर (गिन्गी द० आर्कट में
आप तीन वर्ष हुए एक बड़ा मंदिर बनवा रहे
थे जो अधूरा है व उसमें तीन लाख रु० तो लग
चुके हैं । आप कोई शिष्य नहीं छोड़ गये ।
जैन-तामिल जनताको इनके मठकी व्यवस्था
करनी चाहिये ।

महाविद्यालय व्यावर—की प्र० कमे-
टीकी बैठक भादों वदी ७ को रा० बा० बा०
नांदमलजीके सभापतित्वमें हुई थी जि०में प्रथम

२४४९ की रिपोर्ट सुनाई गई व विद्यार्थि-
योंको पारितोषिक बांटा गया तथा दो न्यायतीर्थ
पास विद्यार्थियोंको रजतपदक दिये गये व
सभापतिजीने लड्डुओंकी प्रभावना बांटी व
आगामी अधिवेशनके लिये सेठ चंपालालजीने
आमंत्रण दिया । फिर ७ प्रस्ताव इस प्रकार
हुए । १—महाविद्यालयके प्रौढ्य फंडका हिसाब
भेजने बाबत २—महाविद्यालयकी आमदनीकी
महामंत्री महासभासे मांग ३—बजटके शेष रुपये
भेजे जावें । ४—बोर्डिंगका स्थान संकुचित होनेसे
बढानेके लिये सेठ चंपालालजी व कुंवर मोती
लालजीसे प्रेरणा । ५—सेठ मोहनलालजी खुर-
ईसे ९०००) विद्यालयके बाकी हैं वे मंगाये
जाय व बकाया पांच२ हजारकी स्वीकारता भी
ली जाय । ६—विद्यालयके अधिष्ठाता ब०
छोटेलालजी नियत-हों । ७—पास की गई
नियमावली छपाई जावे ।

कुंथलगिरि—से कुलभूषण ब्रह्मचर्याश्रमके
विद्यार्थी करोब सभी व अधिष्ठाता ब० पार्श्व-
सागरजीको अकस्मात् जोरजुलमसे वहाँके पबंधक
सेठ रावजी सखाराम (भूम) व सेठ कस्तूरचंद्रजी
परंदाने निकाल दिये हैं व आश्रम छिनभिन्न
हो गया है जिससे दि० जैन समाजमें
बड़ा भारी हाहाकार मच गया है । इसका
आवश्यक उपाय सोलापुर प्रान्त व तीर्थक्षेत्र
कमेटी द्वारा होना ही चाहिये । ब० पार्श्वसाग-
रजी अभी बासीमें हैं व कई विद्यार्थी सोलापुर
बोर्डिंगमें भेज दिये गये हैं । आश्रमकी यह
दशा अतीव दयाजनक है । आश्रमका सब माल
असबाब भी छिन लिया गया है ।

पर्युषण पर्व व स्वार्थमय विचार ।

(ले०-पं० दीपचन्द्रजी वर्णी-सागर ।)

नित्यके समान इस वर्षमें भी पर्युषण पर्व आगया । नरनारियोंको वस्त्राभूषण सम्हालने, मेवा मिष्ठान्न आदि भोज्य पदार्थ एकत्र करने तथा अपने सगे सम्बन्धीजनोंको मिलने मिलाने आदिकी तैयारियां प्रारम्भ हो गईं । मंदिरोंमें भी यथासंभव सजावट बनावट दिखाई देने लगी । संगीत करनेवाले गवैये, अपनी तान तलवारोंको सम्हालने लगे, क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि समय कंठ बैठ जाय घोखा दे जाय, व्रत जाय तो भले पर आ इ ई इ में फेर न पड़े। लवंग पान तथा भंगभवानी चरस, आदिका भी गुप्त प्रबन्ध होने लगा । यह सब हो रहा था कि पंडितजी महाराजने भी अपने पोथीके पत्रे सम्हाले, भूले भाले पाठोंको फिरसे नवीन किये । सोचने लगे, लोग बड़े मूर्ख हैं, कहते हैं कि चौमासेमें व्यापार नहीं होता, मालकी खपत नहीं होती, क्योंकि व्याह समैया नहीं होते, परन्तु हमारी सहारंग तो अभी आई है । सालभरकी रोजी पैदा तो अभी होगी । जहां १० दिन अथवा १ माह और यदि कहीं बहुत हुआ, तो चौमासा ठहर गये कि पौवारह । सो अमलमें तो १० दिन पर्युषणकी बात है । और शेष दिन तो जैसे घर रहे वैसे ही वहां रहना होता है किंतु घरसे भी कहीं बड़चढ़कर आराम मिलता है । क्योंकि घर पर तो बही

दाल रोटी चावल, इतनेपर भी कहीं घी नहीं, कहीं दूध नहीं, लावे कौन, और लावें तो पेटीमेंसे कल्दार भंजाना पड़े। इस लिये अपना तो यही निश्चय है कि सहकुटुम्ब कहीं चार महिनेको आ डटना और आनन्दसे विताना, बाद ८ मासके लिये विदाई लाना बस साल खतम्। अहा हा ! कैसा अच्छा धंधा है । इसमें न पूंजी लगे, न हाथ पांव हिलाना पड़ें । बल्कि उल्टे पांव पूजे जाते हैं (मूछोंपर हाथ फेरता हुआ) अच्छा ठीक है (चिट्टियोंको सम्हालता हुआ) चिट्टियां तो कई स्थानोंसे आई हैं क्योंकि नाम तो प्रसिद्ध हो गया है परन्तु यहां तो अब इन नवीन पंडितोंके मारे नाकों दम है क्या करें ? इन नये सुधारकोंने हम लोगोंपर तो कुठाराघात किया है। जहां तहां पाठशालाएं विद्यालय खोलकर सैकड़ों पंडित तैयार कर दिये हैं और अब भी इनको संतोष नहीं हुआ । नित्य नवीन पंडित बना रहे हैं । ये लोग जहां तहां पहुंचकर पाठशालाएं खुलवाते हैं, स्वाध्यायका उपदेश देते हैं शास्त्र सभाएं करके, द्रव्यानुयोग चरणानुयोग करणानुयोगादिके ग्रन्थोंको पढने परीक्षा प्रधानी बननेका उपदेश करते हैं, इन लोगोंने तो गबदा दिया । यदि ऐसा ही चलता रहा, तो हमारे जैसे निरक्षर भट्टाचार्योंको तो पेट पालना

कठिन हो जायगा, क्योंकि इनके होते एक तो हमको कोई पूछेगा ही नहीं और यदि कहीं बुलाये गये गये भी तो ये लोग हमारी बात ही जमने न देंगे (मुखाक्रांति मलिन होजाती है) इत्यादि विचार ही रहे थे, कि उनके नौकरने बीच ही में छेड़ दिया ।

नौकर--अजी क्या हुआ ? जो आप १० मिनट पहिले तो मूँछपर हाथ फेर रहे थे और अभी २ अचानक चेहरा मलिन हो गया । देखो ये ही दिन तो कमाईके थे । कहीं चौमासा करते घरका खर्च बचता और लोगों पर भी बजन पडता सो यों ही बिता दिये, अब पर्युषणपर्व ही आगया सो कहींका कुछ निश्चय हुआ क्या ?

पंडितजी--भई चेतू, तेरा कहना ठीक है। मैं पहिले तो प्रसन्न हुआ था किचलो चौमासा न सही, अपनमें तो बह ताकत है कि १० दिनमें ही पौवारह कर लेंगे परन्तु ज्यों ही इन सुधारकोंकी कर्तूत पर ध्यान आया कि सब मजा किरकिसा हो गया । चिट्ठी तो कई हैं, परन्तु करें क्या ? हम तो ठहरे पुराने आदमी अपनी प्रथमानुयोगकी कथायें सुनाकर कुछ व्रत विघ्नान उद्यापन, प्रतिष्ठादि करा लेते और अपना प्रयोजन साध लेते थे । लोग भी बिचारे भोले थे, जो कोई कुछ कहता तो राजवार्तिक गोमट्टसार समयसारादिका नाम लेकर कोई २ बातें कह देते और वे लोग सत्य मान लेते थे, परन्तु अब तो बोलना ही कठिन हो गया है, शब्द बोलनेसे पहिले पंक्ति पृष्ट अध्याय बतना चाहिये, उक्ति निरुक्ति, नय प्रमाण लगाना चाहिये । यदि ऐसा न कर सके तो हंसी

उड़ती है, मूर्ख ठहराये जाते हैं । इसीसे विचारमें पड़ा हूँ कि पर्युषणमें कहाँ जाऊँ, जहाँ पूजा प्रतिष्ठा भी हो और द्रव्य प्राप्ति भी हो ।
नौकर--पंडितजी, हमारी बात मानों तो कहें ।
पंडितजी--अरे भाई, हितकी बात होगी तो क्यों नहीं मानेंगे ? जल्दी कहो ।

नौकर--तब सुनो गुज.....

पंडितजी--अहाहा अच्छी बात कही, मैं तो मूक ही मया था । निःसंदेह वह प्रांत बड़ा ही भोला है । भले ही वहां कुछ अंग्रेजी पढ़नेवाले हो गये हैं, परन्तु संस्कृत तथा धर्मशास्त्र पढ़नेवालोंका तो अभाव ही है । यद्यपि वहां पर स्व० सेठ माणिकचंद्रजी तथा दिगम्बर जैन प्रांतिय सभाने अपने उपदेशकोंको भ्रमण कराकर सभाओंके अधिवेशन कर करके बहुत कुछ विद्याप्रचारके प्रयत्न किये और बहुत कुछ अंशमें सफलता भी हुई है, परन्तु वह सफलता सफलता नहीं कही जा सकती है, क्योंकि वहांके लोगोंके हृदयमें यही बात भर रही है कि हम तो व्यापारी हैं इस लिये अपनी जीविकाकी विद्या गुजराती अंग्रेजी पढ़कर व्यापार व अंग्रेजी नौकरीमें लग जाना ही हमारा कर्तव्य है, परम्परासे दर्शन करना चला आता है करलेना, भक्तिपूर्वक अपने कुलगुरु भट्टारकों, पंडितों आदिका भोजनादिसे सत्कार करना, यही मात्र धर्म है । अधिक पढ़कर कुछ धर्मकी आजीविका नहीं करना है इत्यादि । यही कारण है कि आज सतत प्रयत्न होनेपर भी गुजरात प्रांतने न तो अपने प्रांतमें कोई संस्कृत विद्यालय (जिसमें उच्च कोटिका साहित्य

न्याय, व्याकरण, तथा धर्मशास्त्र पढ़ाया जाय) ही खोला, और न कोई भी विद्यार्थी काशी, मोरेना, जवळपुर, सागर, व्यावर आदि विद्यालयोंमें भेजकर पढ़ाया। वास्तवमें आधुनिक भट्टारकोंने तो हम लोगोंके लिये भारी उपकार किया था अर्थात् उन्होंने तो अपने२ गच्छके शिष्यों (यजमानों) को और तो क्या अष्टद्रव्यसे पूजा करने तकका अधिकार नहीं दिया था। फिर स्वाध्याय (शास्त्राभ्यास) करना, सूत्र पाठादि करनेकी तो बात ही क्या? उन्होंने भय भी अच्छा दिला रक्खा था “ कि जो गृहस्थ पूजा करे व स्वाध्याय करेगा, उसका नखोज जायगा ” ।

यही तो बात है कि गुजरातमें १५ वर्ष पहिले अष्टद्रव्यकी पूजाका प्रचार न था, और अब भी बहुतसे स्थानोंमें नहीं है। वे तो जलादिसे अभिषेक करके चरणोंपर केशर तथा पुष्प चढ़ा देने मात्रको ही पूजा समझते थे, इसी कारण वहाँके कई मंदिरोंमें अष्टद्रव्यसे पूजा करनेके योग्य न तो बर्तन (वासन) ही पाये जाते थे और न पूजा तककी पुस्तकें यद्यपि तेरापंथने बड़ी उछळ कूद मचाई और लोगोंको अपने पैरोंपर खड़े होनेका उपदेश दिया अर्थात् गृहस्थोंको देवपूजा तथा स्वाध्याय करने पर उत्तेजित किया और इस कार्यमें सफल भी हुवे, परन्तु केवल उत्तरके प्रांतों हीमें। दक्षिण और गुजरात इनके चंगुलमें न फंसा। यहां तो भट्टारकोंकी ही तूती बोलती रही। इसके बाद इन सभावोंने अपना राग अलापा, इत्यादि सब हुवा, परन्तु हमारे प्रिय गुजरात

प्रांत पर लेश भी प्रभाव न पड़ा। यद्यपि ये लोग भी सभायें कर कर प्रस्ताव कर लेते हैं परन्तु हमारे पुण्योदयसे इनके अंतःकरणमें संस्कृतके प्रौढ विद्वान् तैयार करके धर्मतत्वोंके प्रचार करनेका भाव हो ही नहीं सक्ता है।

नौ०—अजी पंडितजी महाराज, आपने सुना है कि नहीं कि अबके वैशाख मासमें लग्न-सारा पर सौजित्रामें मेवाडा भाइयोंके समक्ष जाकर सेठ मूलचंदजी कापडिया, छोटालाल घेलाभाई गांधोजी तथा सरैयानेज। गुजरातमें एक ब्रह्मचर्याश्रम खोलनेकी आवश्यकता बताई तो ऐसा ब्रह्मचर्याश्रम पावागढ़ क्षेत्र पर खोलनेका निश्चय होरहा है व बहुतसे मेवाडा भाई इसमें सहायता देनेको भी तैयार हुए हैं।

पं०—क्या कहा? गुरुकुल! गुजरातमें! असंभव १ सर्वथा असंभव!

नौ०—जी नहीं, निश्चय हो रहा है।

पं०—तुझे पक्का मालूम है?

नौ०—जी हां।

पं०—तबतो.....परन्तु चिंता नहीं चाहे जो खुले संस्कृत व उच्च तत्त्वज्ञान तो वहां होना ही नहीं है। वह भी १ साधारण बोर्डिंग या पाठशाला ही समझिये। क्योंकि ये लोग ६० साठ सत्तर रुपया-मासिक वेतन न अध्यापकोंको देंगे न योग्य शिक्षा मिलेगी। ये लोग देखेंगे थोड़े वेतनवाला कोई १ अध्यापक और चाहिये कमसे कम तीन चार पूर्ण विद्वान अध्यापक, अनुभवी बयोवृद्ध धर्मका दृढ़ श्रद्धानी जैन सुपरिन्टेन्डेन्ट, जैन रसोइये, पुस्तक भंडार और प्रतिज्ञा पूर्वक कमसे कम ८ वर्ष पढ़नेवाले

तीव्र बुद्धि विद्यार्थी जो गुरुकुलकी रीतिसे धोती डुपडा पहिनकर चोटी रखकर मुंडन कराकर सादगीसे रह सकें। सो तुम जानते हो, गुजरात फेशनपसन्द देश है। यद्यपि महात्मा गांधीकी आंधी वहां बहुत चली परन्तु हमारी जैन समाज पर उसका बहुत ही कम प्रभाव पड़ा क्योंकि इनको चाहिये बढिया मेनचेष्टरकी धोतियां, साढियां आदि क्योंकि खादीसे इनका शरीर छिलता है। चर्खा चलानेमें हाथ दुखते हैं, सेठाई जाती है इस लिये हमको कुछ चिंता नहीं। हम तो पर्युषणमें गुजरात ही में जावेंगे, और ऐसा प्रयत्न करेंगे कि जिससे या तो वह गुरुकुल गर्भसे बाहर ही न आवे और यदि जन्म ले भी ले तो भी बाल्य या वृद्धावस्थाके निर्बल माता पिताकी संतानके समान निर्बल और अल्प वयस्क रहे। नहीं मालूम ये लोग (सुधारक) क्यों हमारी आजीविकाके शत्रु बन रहे हैं? सोचो तो कि जब ये लोग पढ जावेंगे तो हमारी पृष्ठतांड कहां रहेगी? अभी तो हम लोग अंधोंमें कानेके समान राजा हैं, प्रभू हमारी रक्षा करो, जैसे बने ऐसे इस प्रांतमें संस्कृत व उच्च कोटिका तत्वज्ञान चारों अनुर्योगोक्ता वास्तविक मर्म ज्ञान न फैलने पावे इसीमें हमारा भला है।

नौ०-तो महाराज शीघ्र चलकर उपाय करो नहीं तो फिर कुछ हाथ न आवेगा, क्यों कि सुना है गुजराती बातके पक्के होते हैं।

पं०-सो तो कुछ बात नहीं है। बड़े बूढ़े सब हमारे कब्जेमें हैं और द्रव्य देनेवाले भी वे ही हैं। और अभी कोई ध्रौव्य द्रव्य तो हुवा नहीं

है ये तो वसंत ऋतुके बादल केवल गर्जनेवाले न कि वरसनेवाले हैं। तो भी उपाय करना ही चाहिये। अच्छा चलो आज ही।

नौ०-जी चलिये (दोनों जाते हैं)

नोट-उपर्युक्त स्वार्थी पंडित व उनके नौकरकी बातचीत परसे हमारे गुजरातके भाइयोंको चाहिये कि वे अपने आदर्श पर दृढ़ होकर कार्य करें और गुरुकुल जिसमें कमसे कम ५० बालक लाभ लेकर उच्च कोटिका धर्मशास्त्र, न्याय, व्याकरण और साहित्यके प्रौढ विद्वान तैयार होते रहें, ऐसा प्रयत्न करना चाहिये। गुजराती भाइयोंको ऐसे कार्यके लिये लाख पौनलाख रुपया एकत्र करलेना वायें हाथका खेल है, क्योंकि वहाके भाई सरल स्वभावी तथा श्रद्धानी व भक्त हैं। आशा है समस्त गुजरात उक्त गुरुकुलके प्रस्तावको अपनाकर इस पर्युषण पर्वमें उसे चिरस्थायी रूपेण शीघ्र खोलनेके लिये शक्तिको न छिपाकर द्रव्य प्रदान करेगा और शीघ्र खुलवाकर गुजरात परसे अज्ञानका लंछन दूर करेगा। पावागढ स्थान बहुत उत्तम है-गुरुकुल योग्य है।

दीपचंद वर्णी ।

पूजनके लिये खातरीलायक-
पवित्र काश्मीरी केशर-

मगाईये। मूल्य ३) फी तोला।

पनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-सुरत।

वर्तमानकाल और जैनधर्मकी आवश्यकता ।

(लेखक:—बी० हजारीलाल जैन बी० ए० रिसालकावास,—आगरा)
(गतांसे आगे)

हमारे बहुतसे भाई जैनधर्मकी इसीलिए निंदा करते हैं कि वह दबूपन और कायरताके बीज बोकर मनुष्योंमें क्षत्रियोचित भावको हटा देता है । पर ऐसा सोचना उनकी भूल है । भारतवर्षका इतिहास इस बातकी साक्षी नहीं देता । प्रतापशाली जैनी राजा चन्द्रगुप्तको कौन नहीं जानता और कौन नहीं जानता कि यूनानी सेनाको परास्तकर उसने भारतमें अपना अखण्ड राज्य स्थापित किया था । कौन नहीं जानता कि ऐसे समयमें वीरोचित कार्य करके उसने भारतवर्षकी रक्षा की थी । महाराजा खारवेल और अमोघवर्ष भी ऐसे ही

प्रतापशाली राजा हो गये हैं । एकने करीब १ सभी पश्चिम और दक्षिण भारतके राजाओंको परास्तकर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था और दूसरेने अपने व्यापारकौशलसे दूर २ देशोंसे भी सम्बन्ध जोडा था । वीरता कोई मांस खाने हीसे नहीं आती । यह तो पुरुषका स्वाभाविक धर्म है । अगर ऐसी बात न हो तो आप नपुंसकको कितना ही मांस क्यों न खिलावें परन्तु वक्त पडने पर वह अवश्य भाग जायगा । अब हम आपको निम्नलिखित कोष्टक द्वारा यह बतलावेंगे कि पौष्टिक तत्त्व मांसमें अधिक है या फलादिकमें—

(मनुष्यके योग्य कुदरती खुराकसे उद्धृत)

मांस और वनस्पतिके पृथक्करणका कोष्टक (Table)

जाति	नं०	वस्तुका नाम	जल	मांस बनाने- वाला तत्व	चिकनाई	मिठाई	क्षार	पौष्टिक तत्व
धान्य	१	गेहूँ	१३.५	१३.८	१.९	६९.१	२.०	९८.०
	२	चावल	१२.४	७.६	०.९	६८.९	१.२	९८.१
	३	चने	१०.४	१५.६	६.११	६३.६	३.०	१२४.३
	४	मक्का	१३.१०	९.८५	४.६०	६८.५	१.५	१००.६
	५	तुवर	९.०	२१.९	१.६	६४.६	२.९	१०१.०
	६	मसूर	१२.०	२५.०	१.९	६८.३	२.०	९९.५
	७	मूंग	९.९	२५.५	२.८	५५.७	३.२	११८.७
	८	बटाणे	९.५	२४.६	१.०	६२.०	२.९	१०१.०
	९	गुवारफली	११.८	२९.९	१.४	५३.९	३.१	९७.७

जाति	नं०	वस्तुका नाम	जल	मीस बनाने- वाला तत्व	निकनई	मिठाई	क्षार	पौष्टिक तत्व
शाकभाजी	१०	बालोल	११.१	२३.७	०.२	५५.६	३.७	९५.८
	११	भिंडी	१५.०	८.८	५.०	७०.५	०.६	१२१.६
	१२	कोल्हा	७५.०	२.२	०.२	२१.६	१.०	१५.०
	१३	टमाटर	९२.४	१.६	०.३	४.१	०.६	७.२
	१४	कांदा	८६.०	१.७	०.१	१०.८	०.७	१४.४
दूध	१५	भाजी	८८.५	३.५	०.६	४.२	२.०	१०.२
	१६	गांजर	८६.५	१.२	०.३	९.२	०.९	१२.५
	१७	भेषका दूध	८४.१०	४.०	७.१	४.०	०.८	२८.९
	१८	पनीर	२७.५६	४४.०८	१५.९५	—	५.७२	१००.८
	१९	खोपरा	१५.०	५.७	५०.६	२७.९	१.७	१६५.९
फल	२०	केले	७५.१	१.३	०.६	२२.०	०.९	२८.१
	२१	अंजीर	७९.६	१.५	—	१७.९	०.६	२१.८
	२२	मटन	७०.०	१४.५	१४.७	—	०.८	५३.८
मांस	२३	मुर्गी	७४.०	२१.०	३८	—	०.८	५३.६
	२४	मछली	८६.०	११.९	०.२	—	१.२	१४.०
	२५	अंडे	७४.०	१४.०	१०.५	—	१.६	४३.४

उपर्योक्त कोष्टकसे आपको यह पता लग जावेगा कि घान्य, शाकभाजी और फलोंमें मांससे दुगुने और तिगुनेका फर्क है। मटन, मछली, मुर्गी और अंडेमें क्रमशः १३.८, १४.०, १३.६, और ४३.४ ही पौष्टिक तत्व है पर चना, मक्का, तूवर, मूंग, भिंडी, पनीर और खोपरामें क्रमशः १२४.३, १००.६, १०१.०, ११८.७, १३१.६, १००.८, १६९.९, पौष्टिक तत्व है। यही नहीं हम आपको एक और बिलायतके डाक्टरका इसी विषयमें प्रमाण देते हैं। सन् १९०८में डाक्टर निकलसनने १०००० लडकोंको छः महीने तक फलादिका भोजन कराया और किसी दूसरे डाक्टरने इतने ही लडकोंको मांसाहार पर रक्खा। छः महीने पश्चात् जांच करमें पर

वनस्पतिके आहार करनेवाले मांसाहारी बालकोंसे अधिक तन्दुरस्त, बचनमें विशेष और स्वच्छ चमड़ीवाले थे।

हाय ! यह देखकर हमें कितना दुःख होता है कि इन्द्रियलोलुपी मनुष्य अपने स्वार्थवश देवीके नामपर सैकड़ों प्राणियोंका संहार करते हैं। बहुतसे तो यह मनौती करते हैं कि 'हे माताजी ! यदि मेरा पुत्र अमुक रोगसे अच्छा होजाय तो मैं एक बकरा चढाऊंगा।' भला किसीने आज तक देवीको मांसभक्षण करते देखा भी है ? यदि नहीं, तो फिर देवीका नाम क्यों बदनाम करते हो ? देवीको लोग 'जगदम्बा' नामसे पुकारते हैं। क्या कभी किसीने ऐसा भी सुना है कि कोई माता अपने बच्चेको खा जाती हो। उस देवीके लिये तो समस्त संसारके प्राणी

बाळक—पुत्रवत् हैं फिर भला वह ऐसा क्यों चाहने लगी और क्या मनोती सर्वदा सफलीभूत ही होती है ? यदि देवी किसीको मरनेसे बचा दे तो ऐसा कौनसा प्राणी है जो मरनेकी इच्छा करता हो ? धन, स्त्री मां और बाप इन सबसे बढ़कर प्राण प्यारे हैं ।

“मातां पासे बेस मांगे, कर बकरेका सांटा ।
अपना पूत खिलान्न चाहे पूत देजे का काटा ।
हो दिवानी दुनियां” ।

दूसरेका बुरा चाहकर क्या कभी किसीका भला हुआ है ? जो एक बार किसीकी हत्या कर डालते हैं उनका हृदय वज्रका सा कठोर हो जाता है—हाथ नीचसे भी नीच कर्म करनेमें नहीं हिचकते । लोग यहां पर कह सकते हैं कि साहब ! हम मारते नहीं इस लिए हमें खानेमें क्या दोष ? पर इसके उत्तरमें हमारा नम्र निवेदन है कि यदि आप खावें नहीं तो कसाई उन निरपराध प्राणियोंका बध ही क्यों करें ? एक शास्त्रकारने एक जीवके पीछे आठ मनुष्य पापके भागी बताए हैं सो बहुत ही ठीक है । उसका कहना है:—

“अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रिय विक्रयी ।
संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥”

अर्थात् “ मारनेमें सलाह देनेवाला, शस्त्रसे मरे हुए जीवोंके अवयवोंको पथक् करनेवाला, मारनेवाला, मोललेनेवाला, बेचनेवाला, संवारनेवाला, पकानेवाला, और खानेवाला ये सब घातक ही कहलाते हैं । ”

मांसाहारियोंकी बासनाएँ सदा खोटी रहा करती हैं । मनुष्यके दांत ऐसे नहीं बने हुए हैं

जैसे कि सिंहव्याघ्रादिके और न वे जिहासे ही उतता काम लेते हैं जितना कि मुखसे । हमारे दांत नुकीले और चीडफाडकर खानेके योग्य नहीं हैं । मांस खानेवाले प्रायः नासूर, क्षय, ज्वर और अंतीडीकी बीमारीसे मरते हैं । मिस्टर जोनबुडका कहना है कि “ I maintain that flesh-eating is unnecessary, unnatural and unwholesome.” अर्थात् मैं दानेके साथ कहता हूं कि मांस भक्षण करना निरुपयोगी, कुदरतके विरुद्ध और रोगोंको उत्पन्न करनेवाला है । हमें केवल शुद्ध सात्विक और उपयोगी भोजन करना चाहिए क्योंकि कहावत भी मशहूर है “ जैसा आहार वैसा विचार ” आप जैसा भोजन करेंगे वैसी ही सदा आपकी भावनाएँ बनी रहेंगी ।

इस अहिंसा धर्मको सिर्फ जैनियोंने ही नहीं किन्तु प्रायः सभी धर्मावलम्बियोंने अंगीकार किया है । अब हम यहां पर शास्त्रोंके कुछ वाक्य उद्धृत करते हैं जिससे साफ प्रगट हो जावेगा कि विशाल अहिंसामय धर्मके अनुसार आचरण करनेसे ही आत्माको शांति मिल सकती है ।

“यो बंधनवधकेशान् प्राणिनां न चिकीर्षति ।
स सर्वस्य हितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तपशुते ॥”
(मनुस्मृति)

“देवापहार व्याजेन यज्ञव्याजेन वेऽथवा ।
घ्नन्ति जन्तून् मत्घ्ना घोरान्ते यान्ति दुर्गतिम् ॥

“सर्वे वेदा न तत् कुर्युः सर्वे यज्ञाश्च भारत ।
सर्वे तीर्थाभिषेकाश्च यत् कुर्यात् प्राणिनां दया ॥
(महाभारत)”

अब हम इस विषयमें अधिक न लिखकर अंगरेजीके प्रसिद्ध विश्वकोष ' इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटनिका'में मांसाहार परित्यागके विषयमें जो कुछ लिखा है उसका सारांश लिखे देते हैं । आशा है उपर्योक्त विचारोंसे हमारे सभी भाई हिंसात्मक क्रियाओंसे घृणा करने लगेंगे ।

मांसाहार परित्यागके कुछ लाभ ।

(१) **स्वास्थ्य सम्बन्धी लाभ**—जो लोग मांसाहार करते हैं, संभव है कि उन्हें वे रोग पकड़लें जो कि उस पशुके शरीरमें रहे हों जिसका मांस वे खाते हैं । इसके अतिरिक्त जो पशु अपने नैसर्गिक भोजन घासके अतिरिक्त और पदार्थ खाते हैं उनका मांस खानेवाले बहुधा गठिआ, वात, पक्षाघात प्रभृति वात विकारोंसे उत्पन्न रोगोंसे आक्रान्त होते हैं ।

(२) **अर्थशास्त्र सम्बन्धी लाभ**—फलाहारकी अपेक्षा मांसाहार अधिक खर्चीला होता है । जितनेमें दो चार आदमी खा सकते हैं मांसाहारकी व्यवस्था करनेसे एक आदमीको भी पूरा नहीं पड़ेगा ।

(३) **सामाजिक लाभ**—एक एकड भूमिमें धान, गेहू आदि बोएजाय तो उसमें उत्पन्न अन्नसे जितने मनुष्य भोजनकर सकेंगे वही पैदावर यदि आहारोपयोगी पशुओंको खिला दी जाय तो उन पशुओंके मांससे उतने मनुष्योंका पेट नहीं भरेगा । जैसे, मान लीजिये कि एक एकड भूमिमें सौ मन धान पैदा हुआ उसे एक मनुष्य सालभर अपने सारे परिवार वर्गोंके साथ खाता है, लेकिन यदि हम दश पशु पालते हैं और उनको उतनी भूमि निकाल दी है

तो देखते हैं कि वे जनावर शीघ्र ही उसे खा जाते हैं और उनके मांससे एक आदमीका सालभर तक भोजन निर्वाह होना मुश्किल है ।

(४) **जातीय उन्नति**—सभी सम्य जाति-ओंका यह उद्देश्य होना चाहिए कि हमारी जातिमें अधिक परिश्रमी और कार्यक्षम व्यक्ति उत्पन्न हों और उनकी संख्याकी उत्तरोत्तर वृद्धि हो, यह तभी संभव है जब कि लोग अधिक शाकाहार करें । ऐसा करनेसे यह होगा कि ज्यों१ निरामिष भोजन करनेवालोंकी संख्या बढ़ेगी त्यों२ कृषक लोग अधिक परिश्रम करके अन्न उत्पन्न करनेकी चेष्टा करेंगे और इस प्रकारसे उस जाति या समाजमें अधिक परिश्रमी लोग उत्पन्न होंगे ।

(५) **चारित्रिक उन्नति**—जिस मनुष्यमें साहस, वीरता और निर्भयता आदि गुण आरम्भमें आचुके हों उसे उचित है कि ज्यों१ उसका ज्ञान बढ़ता जाय त्यों१ मनुष्यता सीखे और पीड़ित जीवोंके साथ सहानुभूति करनेका अभ्यास पैदा करे । अतएव चूंकि निरामिष आहार करनेसे, मांसाहार पशुओंपर जो अत्याचार किया जाता है और उन्हें पीडा पहुंचाई जाती है वह दूर हो जायगी इस लिए मांसाहार प्रवृत्तिका अवरोध करना ही सर्वथा उचित है ।
(अहिंसा दिग्दर्शनसे)

अब हम यहां पर संक्षेपमें यह बतलावेंगे कि इस समय भारतवर्षको ही नहीं किन्तु समस्त संसारको इस पवित्र अहिंसा धर्मके अनुसार आचरण करनेकी परम आवश्यकता है । महत्मा गांधीजीने सरकारसे असह-

योगकी लड़ाई छेड़ दी । कांग्रेसमें इस प्रस्तावके पास होनेपर छोटे बड़े प्रायः सभी भारतीय पुरुष और स्त्रियोंने उस प्रस्तावके अनुसार कार्य करना अपना परम धर्म समझा । जहां देखो तहां राष्ट्रीय झंडा दिखलाई देता था । स्कूल और कालेजोंसे हजारों विद्यार्थी अपने-अपने स्वार्थको छोड़कर जंगमें आभिडे थे । जिधर देखो उधर चरखे ही की तूती बोली जाती थी । क्या गरीब और क्या अमीर सभीने खहर पहिनना अपनः धर्म समझा । स्वराज्यके गीत गाए जाते थे और गांवके लोग इस दिनको ताकते थे जिस दिन इस पवित्र भूमिमें वे स्वराज्यको अपनी आंखोंसे देखलें । पर असलमें वह लड़ाई किसी जाति विशेषसे न थी । वह शांतिमय और अहिंसामय युद्ध था । वह आत्मिक शक्तिकी वृद्धि करानेके लिये परम अस्त्र था और उसीमें कुछ इनेगिने महाशयोंको छोड़कर हम भारतीय असफल हुए । हिन्दू मुसलमानोंसे लड़ने लगे और मुसलमान हिन्दूओंका सत्यानाश करनेके लिये कटिबद्ध हो गए । ताजिओंके वक्त या अन्य किसी हिन्दू त्योंहार पर यह दृश्य देखनेमें आता है । अगर सरकारी अफसर जरा भी छेड़ छाड़ी करें तो लोग उनसे लड़नेमें या उनका बुद्धिचिंतवन करने ही में अपनेको कट्टर असहयोगी समझते थे । महात्माजीने इस पर कितनी बार दुःख प्रकट न किया होगा । पर वह पारस्परिक वैमनस्य बढ़ता ही गया और आज हम अपनेको उसी स्थलपर देखते हैं जिस स्थलपर कि पूर्वमें थे । यदि हम किसीका बुरा चिंतवन न करें

तो यह कदापि सम्भव नहीं कि दूसरा व्यर्थ ही हमें नष्ट करनेको उतारू हो । जैनधर्म यही उपदेश देता है कि मन वचन और कायसे सबकी भलाईका ध्यान रखो । प्रतिदिनकी पूजामें भी इसी मंत्रके अनुसार आचरण करनेके लिए हमारे पूज्य महात्माओंका उपदेश है:—

“क्षेमं सर्वं प्रजानां प्रभवतु बलवान्
धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा
व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां
मास्मभुञ्जीवलोके ।
जैनन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व सौख्य-
प्रदायी ॥”

दूसरा जैनधर्मका मुख्य उपदेश यह है कि तुम्हारी आत्मा अनन्त ज्ञान, सुख, वीर्य और दर्शनमयी है । तुम चाहो तो इस संसारके समस्त पदार्थों—तीनों कालोंकी भूत, भविष्यत और वर्तमान पर्यायोंको ‘दर्पण इव’ जान सकते हो । जिस प्रकार दर्पणमें जैसा मुख होगा वैसा ही दिखलाई देगा, उसी प्रकार तुम्हें संसार के समस्त पदार्थ साफ दिखलाई दे सकते हैं । तुम चाहो तो तुम उसी अवस्थाको प्राप्त हो सकते हो जिन अवस्थाको तुम्हारे तीर्थंकर (भगवान) प्राप्त हुए हैं । संक्षेपमें तुम्ही कर्मोंके भोक्ता और तुम्हीं कर्मोंके कर्ता हो । यदि तुम्हारे कर्म शुभ होंगे । तुम्हें शुभ गति मिलेगी और यदि अशुभ हुए तो अशुभ गति मिलेगी । हमारे धर्मावलम्बी इस बातको बतलाते हैं कि यदि कर्मोंका क्षय करते र तुम बड़ो तो भी तुम ईश्वरावस्थाको प्राप्त नहीं हो सकते हां, उनके

प्रिय अवश्य हो जाओगे । ईश्वर एक है पर जैनधर्म इसके विपरीत, उपदेश देता है कि यदि तुम कष्ट उठानेको तत्पर हो, विघ्नबाधाओंको सहनेके लिए उद्यत हो, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय इन आठों कर्मोंको नष्ट कर सको तो उसी पदको प्राप्त कर सकोगे । और बात भी ठीक है, व्यवहारमें भी ऐसा ही होता है । यदि दो विद्यार्थी एक ही नम्बर प्राप्त करें तो दोनोंको एकसा ही स्थान मिलता है, तो दो पुरुष यदि एक ही गुणोंको प्राप्त कर सकें तो उन्हें एक ही स्थान क्यों न मिले ।

जैनधर्म मुख्यतः शांतिरसका उपदेश देता है । इसकी क्रियाके अनुसार आचरण करनेसे सुख और शांति मिल सकती है । यूरोपवालोंने 'राष्ट्रसंघ' (League & Nations) स्थापित कर संसारमें शांति देनेकी घोषणा कर दी है । इसका मुख्य उद्देश्य छोटे १ राष्ट्रोंकी सत्ता और अधिकारोंकी रक्षा करना है पर उस संघने क्या कर दिखाया यह हमारी समझमें नहीं आता । 'वार फीवर' (युद्धकी आशंका) बढ़ता ही जाता है । यदि शिक्षा विभाग स्वास्थ्य और २ भी आवश्यकीय चीजों पर १ रूपया खर्च हो तो युद्धकी सामग्री, सेनादि रखनेके लिए तीन रूपया खर्चा होता है । क्या इस तरहसे कभी शांति स्थापित हो सकती है ? 'A guilty mind is always suspicious' अंग्रेजीमें कहावत प्रसिद्ध है । अर्थात् दोषीको सर्वदा आशंका बनी रहती है ।

यदि आज हमारे भाई पारस्परिक वैमनस्य

छोड़कर प्रेमपूर्वक एक दुसरेको अपनाएँ, उनकी वृद्धिमें प्रसन्न और दुःखमें दुःखी हों तो यह संसार स्वर्ग हो जाय । जैन धर्म भी इसी बातका उपदेश देता है । अंतमें हम अपने सब भाइयोंसे प्रार्थना करेंगे कि वे जैन शास्त्रोंका अध्ययन करें जिससे इस धर्मकी बखूबियोंको वे समझ सकें और स्व तथा पर कल्याण भी कर सकें । इति ।

उपालम्भ !

(१)

पाप पङ्कमें फंसे हुएको ।

घुसा न देते नहीं हो निकालते ॥
तड़फा रहे हृदय—मीनको सदा, न—
कृपा—वारि देते, निष्पाण करते ॥

(२)

न आदेश कुछ भी उस पंकको ही ।

—देते, व उसको कुछ बुद्धि ही है ॥
इससे न उसको कुछ द्रव्य ही मिला ।
मिलती न समता व कुछ ऋद्धि ही है ॥

(३)

झगड़ा हमारा प्रभो ! देखते हो ।

हमको सिखाते, सुखाते उसे या ॥
हंसते, हमें देख, करुणा न करते ।
व करते न क्यों पार सुधार ही या ॥

—न्द्रान्त ।

पूजनके लिये खातरीलायक—

पवित्र काश्मिरी केशर—

मगाईये । मूल्य ३) फी तोला ।

पन्जर—1द० जैन पुस्तकालय—सुरत ।

* कपूर । *

सब लोग प्रायः यह न जानते होंगे कि कपूर क्या चीज है, किस तरह बनाया जाता है और कहाँसे आता है । कपूर एक प्रकारका तेल है जो कपूरके पेड़की लकड़ीसे निकलता है, इस तेलमें दस हिस्सा कारबन और सोलह हिस्सा हाइड्रोजन और एक हिस्सा आक्सीजन होता है । कपूर बनानेमें इस तेलसे आक्सीजनका भाग अलग करना होता है । कपूर १७३ दर्जा सेन्टीग्रेट पर पिघलता है और १०४ दर्जाकी गरमी पर उड़ता है । यह बेरंग और स्फुटिक और सुगन्धित होता है और पानीमें तैरता है, तेज आँचमें भडक उठता है और अलकोहल स्पिरिटमें गल जाता है । एक पौन्ड यानी आध सेर रेक्टीफाइड स्पिरिटमें करीब डेढ़ छटाक कपूर मिला देनेसे गल जाता है । और यह बहुत अच्छा अर्क कपूर बन जाता है । हैजेकी बीमारीके लिये अर्क कपूर बहुत अच्छी दवा है ।

चीन और जापान कपूरकी पैदायशकी खास जगह है । चीनमें कम पैदा होता है और जितना पैदा होता है वहीं खर्च हो जाता है । चीनमें कपूरकी लकड़ीके सन्दूक बहुत बनाये जाते हैं और मध्य एशियाके मुल्कोंमें बड़ी कदर और कीमतसे बिकते हैं । उन देशोंमें घने बालवाले जानवरोंके चमड़ेकी पोशाकें पहिननेका बहुत चलन है, जिनमें कीड़े बहुत लगते हैं और केवल कपूरकी लकड़ीके सन्दूकोंमें रखनेसे इन कीड़ोंसे बचत और हिफाजत रहती है ।

चीनसे जापानमें कपूरकी बहुत अधिक पैदावार होती है और जिस जगहसे कुल दुनियामें कपूर जाता है उनका नाम फारमूसा है । यह टापू चीन सागरमें है, इसके असल बाशिन्दे मृगलियन नस्लके हैं । इन चीनियोंने असल बाशिन्दोंको मारकर जंगलमें हका दिया है जहाँ पर वे अब भी रहते हैं और चीनियोंके साथ हमेशा फनाद और मुकाबिलापर अमादा रहते हैं । इस टापूमें बहुत ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं और पहाड़ोंपर घने जंगल हैं । जंगलोंमें बांस और दूसरी तरहके जंगली पेड़ हैं । इन्हीं जंगलोंके ऊँचे स्थानोंपर कपूरके पेड़ बहुतायतसे होते हैं । कपूरका पेड़ सैकड़ों वर्ष तक हरा भरा रहता है, यहाँ तक कि दो हजार वर्ष तकके पेड़ अब तक मौजूद हैं । इसके पत्ते चौड़े, मोटे, गहरे रंगके होते हैं । पेड़ बहुत मोटा और ऊँचा होता है जो शाहतल्लतके पेड़से बहुत मिलता जुलता है । इसकी लकड़ी रंग और बनावटमें आबनुसकी तरह होती है । कपूर पेड़की जड़में बहुतायतसे लेकिन पेड़ी और शाखोंमें बहुत कम निकलता है । लकड़ीके टुकड़ोंको पानीमें खूब पकाते हैं और उस पानीको मिट्टीके बरतनोंमें रख देते हैं । ठंडे होनेपर कपूर बरतनोंमें चिमट जाता है, पानी बहादेते हैं और कपूर खुचकर कारखानेदारोंके हाथ बेच डालते हैं ।

यह कारखाने भी उसी जंगलमें है । कारखानेदार कपूरको खूब पकाते और साफ करते हैं और फिर उसे बन्दरगाह टोई चोशियाको भेजते हैं । फारमूसाके टापूमें यह नामी बन्दरगाह है । यहाँ अंग्रेज और यूरोपकी बहुत-

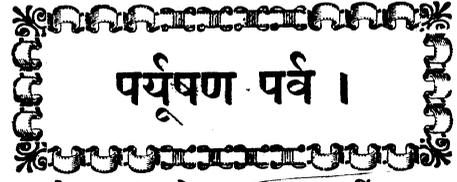
सी जातियां आबाद हैं जो कपूर और चायका व्यापार करती हैं । इस बंदरगाहसे कपूर अमेरिका, जर्मनी और जापानको जाता है, जहां यह फिर साफ किया जाता है और दुनिया-भरके बाजारोंमें बिकता है ।

कपूर बहुतसे काममें आता है । घार्मिक अनुष्ठानोंमें यह बहुत इस्तेमाल होता है । कपूरकी मालायें और जलानेकी बत्तियां भी बनती हैं । औषधियोंमें यह बहुत जगह काम आता है । आजकल बगैर धुयेंकी बारूद कपूरसे बनाई जाने लगी है । कपूरकी सुगंधिसे खराब हवा शुद्ध और साफ हो जाती है । बहुत तरहके कीड़ा और बिमारियोंके जर्म इसकी गंधिसे भागते और मर जाते हैं । जिन दिनों छुआ-छुतकी बीमारियां फैलती हैं, बहुत लोग इसकी ढालियां अपने कपड़ों और जेबोंमें रखते हैं ।

“जयाजीप्रताप”

जैन समाज ।

प्यारी समाज तेरा, कैसे सुधार होगा ।
 इस अबनतीसे तेरा, वैसे उद्धार होगा ॥ टेक
 तू फूट कर रही है, आपसमें लड़ रही है ।
 नहीं एकता पकड़ती, कैसे निस्तार होगा ॥
 दलबन्दी कर रही तू, कषाएं बढ़ा रही तू ।
 शांति भुला रही तू, दुखका न पार होगा ॥
 क्या जानती नहीं है, इस फूटका नतीजा ।
 भारत हुआ विगाना, तुझको भी याद होगा ॥
 अब मान, फूट तनदे, तू एकताको भज ले ।
 क्या “प्रेम” का निवेदन, तुझको स्वीकार होगा ॥
 प्रेमचन्द पंचरत्न-भिंड ।



पर्यषण पर्व ।

(लेखक-पं० प्रेमचन्द पंचरत्न-भिंड ।)

देखो पर्यषण पर्व प्यारा आगया ।

— जैनियोंके हृदय आनंद छा गया ॥

करो स्वागत हृदयसे हे भ्रातगण ।

सदाके सदृश न भूलो एक क्षण ॥

आचार्योंनि भेद इसके दश किये ।

तिन्हें सादर आप अपनाओ हिए ॥

क्षमा पहिला मार्दव है दूसरा ।

तृतीयार्जव सत्य चौथा है खरा ॥

शौच पञ्चम छठा सूर्यम है अहा ।

सप्तमा तैप त्याग अष्टम है महा ॥

धर्म आकिञ्चन नवां उत्तम कहा ।

ब्रह्मव्रत दशवां धर्म धारौ महा ॥

१ उत्तम क्षमा ।

आपको कोई सतावे क्रोधसे ।

सहन कीजे उसे अपने बोधसे ॥

क्रोध करना आपको नहि चाहिये ।

क्षमा धारन कर उसे अपनाइये ॥

२ उत्तम मार्दव ।

देहि धन बलरूप आदिक पायके ।

अभिमानमें आना नहीं हर्षायके ॥

मान दुर्गति खान इसको छोड़ दो ।

मार्दवसे प्रेम अपना जोड़ दो ॥

३ उत्तम आर्जव ।

संकोच लो अब छल कपटके जालको ।

छोड़ दो अपनी दुरङ्गी चालको ॥

जो विचारो बात वह जाहिर करो ।

कर सरल परणाम आर्जव व्रत धरो ॥

४ सत्य ।

झूठसे पावो न जगमें कीर्ति है ।

सत्यकी होती सदा ही जीत है ॥

इसलिए ही झूठको अब त्याग दो ।
सत्य वचनोंमें जिह्वाको पाग दो ।

५ उत्तम शौच ।

शुद्धि गंगाके नहानेमें नहीं ।
प्राप्त होती मल छुटानेमें नहीं ॥
शुद्धता यदि प्राप्त जो करना चहो ।
संतोष जलसे लोभ अन्तरका हरो ॥

६ उत्तम संयम ।

इन्द्रियाँ पांचों करो वशमें सदा ।
रोककर मनको धरो संयम सदा ॥
प्राणियोंकी कीजिये रक्षा सदा ।
शुद्ध संयम पालिये प्यारे सदा ॥

७ उत्तम तप ।

अनशनादिक तप जिन्होंने धर लिए ।
उन्होंने ही कर्म आठों हर लिए ॥
तप बिना नहि मुक्ति होती है कहीं ।
इसलिए तप धारलो मानो कहीं ॥

८ उत्तम त्याग ।

अशन औषधि-आदि चार प्रकारका ।
दान दीजे संघकी हितकारका ॥
दानसे है स्वर्ग सम्पत्ति पावना ।
है धर्म उत्तम त्याग इसको ध्यावना ॥

९ उत्तम आर्किंचन ।

बाह्याभ्यन्तरका परिग्रह छोड़ दो ।
आत्मसे सम्बन्ध अपना जोड़ दो ॥
मोहकी मजबूत फांसी तोड़ दो ।
आत्मबलसे कर्मगढ़को फोड़ दो ॥

यह आर्किञ्चन धर्म मुनि धारन करें ।
कर्म रिपुको जीत शिवरमणी वरें ॥

१० उत्तम ब्रह्मचार्य ।

यती स्त्री मालके त्यागी भये ।
ब्रह्म-भज शिवनारि अनुरागी भये ॥
काम योधासे विजय जिसने लही ।
इस जगतमें वीर सच्चा है वही ॥

इसलिए परनारि लख द्रग मोचना ।
पापकी क्यारी नहीं अब सीचना ॥

अंतिम उपदेश ।

ये धर्म उत्तम दशतरहके धार लो ।
सम्पत्त्वका सरना सदा स्वीकार लो ॥
प्रार्थना इक और मेरो मान लो ।
शुद्ध खादीको पहिनना ठान लो ॥
खादी पहिनकर ही जिनालय आइये ।
मिलोंके वस्त्रोंसे नेह हटाइये ॥
यह निवेदन "प्रेम" का सुन लीजिये ।
खादी पहिननेकी प्रतिज्ञा कीजिये ॥

नये २ ग्रन्थ मगाइये ।

अहिंसा धर्म प्रकाश (=)

जैनधर्मशिक्षक तीसरा भाग (=)

अष्टपाहुड-कुंदकुंदस्वामी कृत मू० व पं०
जयचन्दनीकी टीका सहित अनंतकीर्ति ग्रंथमालाका
पुष्टम ग्रन्थ । पृष्ठ ४९० मूल्य १॥ =) पात्र ।

सामायिक पाठ-संस्कृत प्राकृत व पं०
जयचन्दनीकी वचनिका । लागत मूल्य पात्र आने ।

विमलपुराणजी-दो प्रकारके ६) तथा १।)

षोडश संस्कार- १)

सरल नित्य पाठ संग्रह मू० ॥ ॥) व ॥ ॥ =)

शांतिस्तोत्रान ॥) भावना भवन ३)

राजवार्तिकजी-प्रथम खंड १) दूसरा खंड १)

सुलोचनाचरित्र-ब्र० शैलश्रमसादनीकृत
सरल ऐतिहासिक ग्रन्थ । मूल्य ॥ =)

श्री पद्मावती पूजन (=)

जागती ज्योति १)

पंचमेरु व नंदीश्वर पूजन विधान ॥ =)

पंचपरमेष्ठी पूजन विधान भाषा (=)

दंगानेका पता-

मैनेर-दि० जैनपुस्तकालय-सुरत ।

नीति-रत्नमाला ।

(लेखक—बालकिशन जैन-पालम)

राजाके सप्तांग ये, इतिहासज्ञ पुरान ।
परिहासक गायक कवी, भट्ट तथा विद्वान ॥ १८९
अधना धन इच्छा करें, गर्वित इच्छें बाद ।
मानव इच्छें स्वर्गको, देव मुक्ति अविषाद ॥ १८९
जाका शक्ति न ज्ञात हो, चेष्टा कुल नहीं ज्ञान ।
ताकि संगति मत करो, भाषत हैं मति मान ॥ १८३
क्षुधा समान न अन्य दुख, चिंता सम नहिं रोग ।
अशन प्राप्ति सम सुख नहीं, अपुत्र समां नहिं सोग
दुष्ट उदरके कारणें, किम नहिं करें पुमान ।
चाक देवि जिम बानरी, घर घर नृत्य करान १८९
नृपसेवा जानो इसी, असि धारा अबलेह ।
व्याघ्री गात्र स्पर्शानो, नागिन क्रीड करेह ॥ १८७
प्रहेलिका—अनेकसुषिर(बिल)ब आदिमें, ऋषिसंज्ञक
कअंत । सर्पनको आराध्य वह, कहो जो कल जानंत
निरगुण मानव गुणि पुरुष, अंतर होत महान ।
हार नारिके कंठमें, नृपुर पाद परान ॥ १८९
दुर्मंत्रीतें राष्ट्र क्षय, कुंजरतें क्षय ग्राम ।
श्यालकर्ते ग्रह नष्ट हैं, मातुलतें धनधाम ॥ १९०
सेवनतें बाढ़ें स्वतः, कलह कंडु उद्योग ।
मैथुन निद्रा द्यूत पर-दारा मैथुन भोग ॥ १९०
पेट भरन भोजन करें, मैथुन हित संतान ।
कहैं बचन जो सत्य हित, सों नर श्रेष्ठ महान १९१
योवन धन प्रमुता तथा, विवेक हीत चर अंस ।
एक अनरथ करें, सबमिल करें विध्वंस ॥ १९३

अनालस्य पांडित्यता, शील मित्र संघात ।
शैर्य पंच अचोरहर, अज्ञय निधि विख्यात ॥ १९४
निस्नेह हुवे निर्वाण है, भवको हेतु स्नेह ।
जिस प्रदीप निस्नेहते, छुटै ताप तन देह ॥ १९५
पढ़ै लिखै प्रशहि करे, पंडित जनको संग ।
रवितें बिकसै नलिनि जिम, प्रसैर बुद्धि अभंग १९६
सविनपि विद्याचित्त किस, हरै न ऐसो कौन ।
कांचन मणि संयोग ज्यों, मोहै देखै जौन १९७
जलत अग्नि जिम प्रथम ही, नाशै निज आधार ।
तिम विषयाशा अगन भी, देवै चित्त प्रजार ॥ १९८
लक्ष्मी किसके थिर हुई, भूप हृदय कहां प्रीत ।
अविनाशी किस तन हुवो, वेश्या किसकी मंत ॥
स्वयं स्वगुण ऐश्वर्यको, कथन न शोभे राम ।
निजकर कुच मर्दन किये, लहै न प्रौटा जेम २००
नारीपर मुख द्रष्टिनी, कवी अज्ञ व्यवहार ।
रोगी सेवि अपथ्यको, बिगरत लगै न वार २०१

क्षमावणीके कार्ड

मूल्य ॥) सैंकड़ा ।

दीवालीके कार्ड भी हैं, ॥) सैंकड़ा ।

५० मंगानेवाले ॥) व १०० मंगानेवाले
॥) की टिकट भेजे ।

दीपमालिका (दीवाली, पूजन-)

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

विज्ञान सरिता सरोज ।

(१) तारसे फोटू ।

जीती जागती दुनियांमें नित नए 'करश्मे' होते रहते हैं। अभीतक तो तारसे खबरें ही जाती थीं, किन्तु अब फोटू हस्ताक्षर और अंगूठेकी निशानी भी दूरस्थ स्थानको भेजे जा सके हैं। इसके भेजनेकी मशीन दो होती हैं। एक भेजनेको और दूसरी लेनेको, दोनों रेडियो सेटकी सट्टश होती हैं। जिन्क अथवा तांबेकी प्रतिलिपि बना लीजाती है। इसमें सूक्ष्म लकीरें होती हैं। मशीनमें की सुई इन लकीरोंमें घूमती हैं। दूसरी मशीनमें भी उसी प्रकार एक अन्य सुई सादा प्लेटपर घूमती हुई लकीरें कर देती हैं और फोटू उतर आता है। कहिए क्या यह 'करश्मे' से कुछ कम है !

(२) आंसुओंके दाम ।

अभीतक तो प्रेमी और प्रेमिकाओंकी आख्यायिकाओंमें ही आंसुओंका मूल्य पढ़ा जाता था। वे 'अनमोल' समझे जाते थे। परन्तु अब इस 'कलयुग'में उनका भी यथार्थ मूल्य लग गया। सर अल्मरोथ राइटने वैज्ञानिक खोज द्वारा दूढ़ निकाला है कि आंसुओंमें भी क्रमि विनाशक शक्ति विद्यमान है। अब तो पाठकोंको चाहिए कि आंसुओंको बोटचमें भरके रखते जांय और अंग्रेजी दवा विक्रेताओंसे दाम वसूल करते जांय। वास्तवमें आंसु 'अनमोल' ही निकले !

(३) जर्मनीमें रेडियोकी करतूतें ।

रेडियोने सम्य संसारमें एक नया युग लाकर खड़ा कर दिया है। इसके द्वारा नए २ आविष्कार किए जा रहे हैं। जर्मनीमें इसके द्वारा समूचे राष्ट्रभरकी घड़ियोंका समय ठीक किया जाता है। और यह प्रत्येक पुलिसमैनके गल्लेमें हारकी भांति पहिना दीगई है, जिससे उसके सिरपर एक सीधा छातासा लग जाता है और कानोंमें डबियां (सुननेके लिए) कर्ण फूलसी लटक जाती हैं। इससे पुलिसमैन जहां कहीं हो फौरन खबर पा लेता है और रक्षा करनेको आ उपस्थित होता है। भारतमें अभी उनके दर्शन होना कठिन है।

(४) अमेरिकामें बर्फकी खेती ।

आजकलकी सम्यताने बरफकी मांग भी बहुत बढ़ा दी है। अमेरिकामें तो एक तरहसे इसकी खेती ही होने लगी है। वहां प्राकृतिक रूपमें नदी नाली जो जम जाते हैं उनके बरफको मशीनोंसे काटकर शहरोंमें ले आया जाता है। किन्तु इसे लोग कम पसन्द करते हैं। सं० प्रान्त अमेरिकामें कहते हैं प्रतिवर्ष २४,०००,००० टन ऐसा बरफ गोदामोंमें लाया जाता है। वहीं गत वर्ष कृत्रिम बरफ १९,०००,००० टन खर्च हुआ था। सम्यताका यह ढंग आश्चर्यमें डालनेवाला है।

हरिबंशपुराण चित्रन कागज खुले पृ. ८०० ८)
पद्मपुराण (जैन रामायण) नाटक १)
पंचमेरु व नंदीश्वर पूजन विधान(बड़ा)॥=
शील महिमा नाटक-सुखानंद मनारमा ॥)
पता:-दिगम्बर जैन पुस्तकालय-सुरत ।

શ્રી વીસા મેવાડા દિં

જૈન યુવકમંડળ.

જ્ઞાતિ અને તેની પ્રગતિના ઉપાયો.

લેખક:-આર. જે. શાહ.

બધાઓ ! ખીજી જ્ઞાતિઓના સમાજની પ્રગતિ સાથે આપણી સમાજની પ્રગતિ સરખાવતાં આપણી સમાજ ધણી પછાત છે. તેનાં કારણો આપણે અંતથી ધારીએ તો દૂર કરી શકીએ.

૧-બાળવિવાહ-બાળસંગામની પૃથા આપણામાં કંઈક કંઈક પ્રચલિત હતી, તેમાં સુધારો થવાને બદલે એક પગલું આપણે પાછળ ભરવા થયા છીએ. બાધાઓ ! આ બધું આપણા સમાજની અધોગતિનું નિશાન નહિ તો ખીજું શું ? બાળવિવાહથી જોડાએલાં જોડાં જોઈએ તેવું સુખ પામતાં જોવામાં આવતાં નથી. કેળવણી કે જે તેમની જીવંતીની જરૂરિયાતની ચીજ તે તેમને જોઈવા પ્રમાણમાં મળતી નથી કારણકે બાળવિવાહ અને પછી બાળલગ્ન તેને અટકાવે છે થઈ પડેલું આપણા જોવામાં આવે છે. બાળલગ્ન જેટલાં હાનિકારક છે; તેટલું જ બાળપણની સગાઈ પણ સમાજને હાનિકારક છે.

૨-લગ્ન પ્રસંગે કપડાં પાછળ થતા અર્ચમાં કંઈ સુધારો થયો છે પણ જોઈએ તેટલા પ્રમાણમાં થયો નથી. વરરાજ અને અન્ય કેટલોક પુરુષવર્ગ ખાલી પહેરતો થયો છે પણ હજી સ્ત્રીવર્ગ વિદેશી તેમજ રેશમી કાપડના મોહમાંથી મુક્ત થયો નથી. બહેનોએ જાણવું જોઈએ કે વિદેશી કાપડમાં ચરખીનો પાસ આવતો હોવાથી તેમજ રેશમ કે શેટાના કીડામાંથી બનતું હોવાથી તે કાપડ સમજવું એમાં પાપ છે અને આપણુ જૈન ધર્મના અનુયાયીઓને કલંકરૂપ છે. બહેનોએ ધ્યાનમાં રાખવું જોઈએ કે રેશમી કીમતી કપડાં યા દાગીના પહેરવાથી શોભા વધતી નથી પણ સદાચાર નમ્રતા મળતાવડાપણું મત્તિ ગુણોથીજ શોભા વધે છે.

૩-કરકમરથી લગ્ન કરવાની પૃથાને આપણુ આજકાલ ઉલઘી રહ્યા છીએ, અને જે નહિ ધૃષ્ટતા જોગ તેવાં અર્ચ કરી રહ્યા છીએ. વાળાં પાછળ અર્ચ વિષે અયોગ્ય નથી લાગતું શું ? દારૂખાનાની પ્રથા અંધ હતી તે વળી ચાલુ થયેલી જોવામાં આવે છે. સુધારો તો કયાં ગયો પણ કુધારો દાખલ થતો જણાય છે. દારૂખાનું આપણુ માનીએ છીએ કે આનંદ ઉપજાવે છે પણ ઉલટું તેના અત્યાજી નિર્દોષ પંખીડાં તથા અન્ય પ્રાણીઓને ધારૂતીરૂપ થાય છે. અહિંસા પરમો ધર્મની ભાવનાવાળા મારા જૈન બંધુઓ ! આ સત્રને શું તે વખતે વીસરી જાય છે ? ખરેખર થાય છે તેમજ, નહિ તો આવો વ્યય દારૂખાના પાછળ કરોજ નહિ.

૪-સીમંત તથા બારમાના વરા પાછળ, આવેલા મહેમાનો તથા ગેરહાજર હોય તેમને પણ બાથું તથા ઢેબરાં બંધાવવાની પ્રથા ચાલુ છે. ભાથામાં કળી લાડવા પોતપોતાની સગાઈનાં સંબંધ પ્રમાણે આપવામાં આવે છે. આ પ્રથા વરાવાળાને વરા પ્રસંગે કેટલી કંટાળારૂપ થઈ રહે છે ! ઘેર આવેલાં મહેમાનોને ઢેબરાં માટે કામે લગાડવાં એ શું અયોગ્ય નથી જણાતું ? વળી બંધાવવાને આખી રાતનો ઉબગરો એ શું આ પ્રથા તરફ કંઈ પ્રિયતા ઉપજાવે છે ? બંધાવતી વખતે લાડવા જેવી વસ્તુ ગેરહાજર હોય તેમને માટે માગીને લેવી એ શું અયોગ્ય નથી લાગતું ? આવા પ્રસંગે અમુક માગણી યોગ્ય અને અમુક માગણી અયોગ્ય એવું સાંભળવામાં નથી આવતું શું ? ખરેખર ઉપર પ્રમાણે બધી મુશ્કેલીઓ જોવામાં આવે છે તો તે પ્રથામાં કંઈક કંઈક ફારફેર થવાની જરૂર છે અને એજ કે, જોઆ હાજર હોય તેટલાને અમુક અમુક પ્રમાણમાં ફક્ત બાથું જ આપવું.

૫ યુવાન પાછળ થતું બારમું-કેટલેક અંશે અંધ થતું જાય છે અને તેવીજ રીતે દરેક સ્થળે અંધ કરવામાં આપણું શ્રેય તેમજ મરનાર પ્રત્યે આપણા અંતરની લાગણીનો દેખાવ છે.

માટે યુવાનોના મરણ પ્રસંગે આરમ્બ કરવાની પ્રથા બંધ થવી જોઈએ.

૬-આપણામાં ધણાંખરાં લગ્નો બ્રાહ્મણ વિધિ પ્રમાણે કરાવવામાં આવે છે તો તેને બદલે જૈન વિધિ પ્રમાણે લગ્ન કરાવવાની જરૂર છે. માયાપોએ નાની કુમળી વયમાં પોતાના બાળકોનાં લગ્ન કરી તેમને સંસાર જાળમાં ફસાવવા ધણુંજ ગેરવ્યવસ્થી છે. તે શરીરનું તૂટ અને અક્લક હોંશીયારી તદ્દન નકામું થાય છે. તેમજ કળ્મે-કાંથી પરણત જોડું આખી જીંદગી દુઃખથી યુગ્મરે છે માટે કન્યા અને વર વચ્ચે જોછામાં જોછું ચાર વર્ષનું અંતર અવશ્ય રહેવુંજ જોઈએ. અને કન્યાનું લગ્ન ૧૨ વર્ષ પહેલાં અને વરનું લગ્ન ૧૬ વર્ષ પહેલાં કરી થવું ન જોઈએ.

૭-કરકસરની દષ્ટિએ લગ્ન કરવાની આપણી પ્રથા ધણી પ્રશંસનીય છે પણ લગ્ન કરવાની વિધિમાં ફારફરની જરૂર છે અને તે એ કે જૈન વિધિ પ્રમાણે યોગ્ય ઉમરે થાય તેમાંજ સુખ અમાયેલું છે.

૮-સમાજમાં કેળવણીને પ્રચાર એ સમાજની ઉન્નતિનું એક સાધન છે અને તેનો પ્રચાર વધારવાને યાંત્રિક તરફથી સ્કોલરશીપ યા કેળવણીને માટે મદદની યોજના થવાની આવશ્યકતા છે.

૯-સતિના સાર્વજનિક કામોમાં સહાયરૂપ થઈ પડનરૂં યુવકમંડળ યા વૌલંટીયર મંડળ જેવું મંડળ, કેવી રીતે હમેશાં યાયમ રહી સમાજને સહાય કરી રહે તેને માટે યોજના થવાની ખાસ જરૂરીઆત છે. આ મંડળમાં યુવક મંડળની સહાયતાથી દરેક જગ્યાએ અધરાં પણ કામો સહેલાં થઈ પડ્યાં છે તો પછી આપણે આવા મંડળને આવકાર રૂપ કેમ ન ગણીએ ? ખરેખર આવા મંડળની જરૂરીઆત છેજ.

૧૦-ધર્મિક જ્ઞાનની આપણા સમાજમાં ધણી ઉણપ છે અને તે ઉણપ ઉપદેશકો યા પાઠ-શાળાઓ સ્થાપી પુરી થાય તેમ છે.

૧૧-આવા સમાજનું બંધારણ પંચના હાથમાં છે અને પંચનું કામ સરલ હોય તોજ

તેના બંધારણની સુરક્ષિતા છે. પંચમાં કલાકોના કલાકો સુધી જ્ઞાન એસી રહેવું અને જોલવું તો બધા એક સામટા જોલવું અને તે પણ સબ્યતા વિના અને કોઈ કોઈનાપર આક્ષેપ નાંખતા જોલવું એ શું બંધારણની સુરક્ષિતા છે? ખરેખર નહિજાં માટે આ પ્રથામાં ફેરફાર થવાની જરૂર છે અને તે એ કે પંચમાં જેસવા માટે અસુક ગણતરીમાં દરેક કુટુંબમાંથી માણસો યુગ્તાવા જોઈએ તથા પંચ તરફથી વાદો તથા પ્રતિવાદોને સવાલ પુછવા માટે પણ એક માણસની યુગ્તણીની જરૂર છે. આ માણસ પંચનું કામ જેવું કે પંચનેા હિસાબ પંચ ભેગું કરવા સબંધી ખમર આપવા સબંધી કામકાજ કરશે અને તે ધારવા મુજબ ખીન પગારે માનનીય સેક્રેટરી તરીકે કામ કરવા મળી આવશે.

જોલનાર માણસે ઉભા થઈ, જોલવાની પ્રથા ચાલુ કરવામાં આવશે તો હાલ થતો ધોંધાટ એકદમ બંધ થઈ જશે અને જે જે દરખાસ્તો હશે તેનો યોગ્ય નિવેડો સહેલાઈથી આવશે. બાઈઓ! આવી આવી કેટલીક અયોગ્ય પ્રથાઓ આપણામાં પ્રચલિત હોવાથી આપણી કોમની પ્રગતિ થતી અટકે છે માટે જાણી ન તેને ફરી ફરી સંતોષતી એ શું આપણા મનની નિર્મળતા નથી સૂચવતી ? આવી પ્રથા દૂર કરવાને શરૂઆતમાં કંઈક ટીકાપાત્ર થવું પડશે પણ બલિષ્ઠ્યમાં તે ધણીજ લાભદાયક છે. અસુક માણસ કહેશે કે મારે ત્યથી શરૂઆત ન થાય કારણકે ટીકાપાત્ર થવું પડે પણ બંધુઓ, આપણ બધા એમ ધારીએ કે અમારે ત્યાંથી પહેલ ન થાય તો પછી શરૂઆત થાય ક્યાંથી ? માટે જેને ત્યાં પ્રસંગ આવે તેણે અવસરે પહેલ કરવાની તક ગુમાવવી નહિ. શરૂઆતમાં જે માણસ પોતાને યોગ્ય લાગતી પ્રથાને વળગી રહેતાં ટીકાપાત્ર થાય છે તે પાછળથી પ્રશંસનીય થાય છેજ.

ઉપર મુજબ હમારો નમ્ર અભિપ્રાય આપ સૌ ધ્યાનમાં લેશો એવી હમારી નમ્ર અરજ છે.

તા૦ ક૦—આશા છે કે અઢાર વર્ષની ઉપરનો દરેક યુવક આ મંડળનો તાકીદે સભાસદ થઈ જશે અને પોતાના વિભાગવાર કાર્યવાહકને લખી ડી (વાર્ષિક માત્ર ચાર આના) મોકલી આપી સભાસદ તાકીદે થશે એવી આશા છે. મંડળના નિયમો અને ઉદ્દેશ પત્ર લખવાથી મોકલી આપવામાં આવશે. વીર સં ૦ ૨૪૫૦ શ્રાવણ સુદી ૫ પ્રકાશક-મંત્રીઓ,

શા૦ હીંમતલાલ વરજીવનદાસ

શા૦ સોમચંદ જ્યેંદલાલ

ડૉ. બબરમાં, ઘોરસદ (ખેડા)

ઉત્તમ ત્રણ ગુણ.

(લેખક—માસ્તર લલ્લુભાઈ રાયચંદ-પ્રતેહપુર).

કર કહોટો જીમડી, ઇ ત્રણ રાલો વશ;

પછી ફરો ત્રિલોકમાં, કોઈ ન કહશે સ્વશ.

અર્થ—૧ માણસ હાથનો ચોખ્ખો, ૨ જીભમાં મીઠાશ, અને ૩ લંગોટનો સાચો હોય તો તેને કોઈપણ ઠેકાણે જવાથી અથવા રહેવાથી કોઈપણ માણસને તે અરિય થતો નથી.

૧-હાથનો ચોખ્ખો—આ ગુણ જે માણસમાં હોય છે તો તે ધરમાં ગમે તેટલાં માણસો હેય અથવા પરદેશ નોકરી કરવા જાય, કે કોઈની સાથે દુકાનમાં અથવા ધંધામાં જોડાય તો તેનો એટલો બધો વિશ્વાસ ખેંસી જાય છે કે ધરતું કોઈપણ માણસ તથા નોકરી જેની કરે છે તે શેઠ કે ધંધામાં જોડાયેલ બાગીદાર વગેરે કોઈ તેની પુંઠ જોતું નથી. તે સર્વને એવો પૂર્ણ વિશ્વાસ હેય છે કે કોઈ દિવસ તે એક નજીની દાતણ સરખી ચીજથી દઈ બારેમાં બારે બહુ મૂલ્ય ધરેણું સુધીમાં પણ જીવ બગાડે તેમ નથી. બલે તે સાધારણ સ્થિતિનો હોય પરંતુ તે ઉપરોક્ત વિશ્વસ ગુણને લીધે તેને હજારો નહિ

બધકે લાખો રૂપીઆનો વહીવટ—સામાન નિર્ભય-તાથી સોંપી દે છે. વેપારથી હજારો માઇલ દૂર જતી વખતે, યાત્રાના પ્રસંગોમાં અથવા મરજીની છેલ્લી ધડીએ પેતાની માલ મીલકત કે તાળાં ચારી સુદ્ધાં જે પોતાના અંતના અડીના સગા પુત્ર, સ્ત્રી કે માતાને નહિ સોંપતાં તે સાફ દાનતવાળા મિત્રને કે ખીજા કોઈને સોંપી જાય છે. અથવા જેમાં અંદાજનું કામ હોય છે, તેવામાં પણ તે માણસની પુંઠ જોવામાં આવતી નથી. કોઈ કોઈ વખત માલ ખરીદવામાં, વેચવામાં, દલાલીમાં, નોકરના પગાર ઓછા વત્તા કરી ચુકવવામાં, મકાનો બાંધવાના કામનો સામાન લેવામાં, પ્રતિષ્ઠા જેવા બારે એવજીવેના કામમાં, ઝંવેરાત જેવા મેટા વેપારો ખેડવામાં કે એવા ખીજા અનેક પ્રકારના કામોમાં કે જ્યાં રૂપીઆ એ રૂપીઆની નહિ પરંતુ હજારો ને લાખોની ઉથલપાથલ થતી હોય તેવા સમયે ખોટ ખાય, લાભ જાય, કે અધિક દામ આપે (ધારો કે અસુક વસ્તુના હજારના બારસો ઉત્પન્ન થવાના છે, પરંતુ અજીવજીવે કે પ્રતિકુલ સંજોગોમાં આઠસોમાં વેચી દે) તોપણ તેને તેના માલીક એમ સમજતા કે ધારતા નથી કે મારા માણસે અસુક રૂપીઆ ઓછા લાભ માલ વેચાણ કર્યો માટે તેમાં તેણે હાથ કર્યો હોવો જોઈએ. તેને સ્વપ્ને પણ ખ્યાલ આવતો નથી. આ તો એક દૃષ્ટાન્ત માત્ર છે. પરંતુ એવા હજારો સંજોગો આવે છે કે જ્યાં ખરસાં તર કરવાની તક ધણી વખત મળી આવે છે, તોપણ તે હાથનો ચોખ્ખો એટલે પોતાના હક સિવાયના દ્રવ્યમાં દાનત ન બગાડનાર માણસ અન્યાયતા ને પેતાને ન પોષાય કે ન હાજરે તેવા દ્રવ્યને લાત મારી દે છે. તે તો એમજ સમજે છે કે સોજા ચઢીને જાડા થવા કરતાં દુબલ્લા શરીરે ડાંડા જેવું તે હજારો ગણું શ્રેષ્ઠ છે. ઈટલીકવાર તેમ સમજીને વતવા છતાં તેની સત્યતાપર પાણી ફરી જાય છે, પણ આખરે જેમ પાણીમાં નાખેલું તેલનું ડીપું નીચે જવા છતાં આખરે ઉપર આવી જાય છે, તેમ તે

છુપાઇ ગયેલું સત્ય પણ આખરે બહાર પડી વિશેષ પ્રકાશમાં આવી જાય છે. ને પછી તેની એટલી કદર થાય છે કે પોતાના ધારવાં કરવાં વિશેષ આજીવિકા, વિશેષ માન્યતા ને વિશેષ પૂજા થાય છે, માટે દરેક મનુષ્યોમાં પ્રથમ ઉપરોક્ત ગુણ હોવેજી જોઇએ.

ધણા એવા પણ માણસો મળી આવે છે કે પોતાના ધરમાંજ પોતે બધા બાધઓમાં કર્તા હતાં ને મોડો-વડીલ હોવાથી તે ધણુંખણું કાવું દવું પોતાનાં હાથમાં હોવાથી ધરના મિલકતમાંથી મોટો હાથ કરી દે છે અથવા નોકર હોય તો શેઠ ન જાણે તેરી રીતે દ્રવ્ય છુપાવવા પેરવી કરે છે, છેવટે “પાપ છાપરે ચઢીને પોકારે છે” તે પ્રમાણે પણ તેવું પાપ છાવું રહેવું નથી. કદાપિ કારણવશાત જાહેરમાં ન આવે તોપણ કુદરતને તો ખરાખરજ ન્યાય આપવો પડે છે એટલે કે મેળવેલું ધન અગ્નિથી, પાણીથી, ખીમારીથી અથવા એવા ખીજા કોઇ કારણોથી નાશ થાય છે. અથવા તેવા પુરૂષોને સ્ત્રીખીમાર રહે, કાંતો મરી જાય ને તેને લીધે શરીરથી ખરચમાં ઉતરવું પડે, સંવત્ થાય નહિ, થાય તો જીવે નહિ, ને મેળવેલું ધન સગા વહાલા કે રાજ્ય ખાય છે ને પોતે અન્યાયથી અને અતિ તૃણ્યાથી અને હક વિનાના ને ન પોષાય તેવા મેળવેલા દ્રવ્યને લીધે દુર્ગતિમાં જવું પડે છે. પરંતુ માણસો કયાં દેખે છે? કેમકે આજકાલ પૈસા-વાળાઓનીજ સરખરા ને માન્યતા છે. પછી તે ચોરીથી, ડિંસાથી, અન્યાયથી કે ગમે તે રીતે મેળવેલું હોય પણ તેને જીતેજન મળે છે, તેની પીક ઠોકાય છે, તેને ખાહોશ કહી શાખાશી આપે છે તેથી દુનીયામાંના થોડાક સજ્જનો સિવાય ધણાખરે એને એનીજ લગની લાગેલી જ્ઞેત્તમાં આવે છે. ધનવાન થવું—મલે પાપ થાય કે પુન્ય તેની પરવા નથી. પૈસાદાર હોઇશું તો આપણી પુછ છે, આપણી ગણતરી છે, આપણી માન્યતા છે, શ્રેષ્ઠતા છે એવા ખ્યાલથી ને ઉત્તેજનો મલવાથી ઉપરોક્ત ગુણ દિવસે દિવસે દબાતો જાય છે. માણસો ગમે તેમ ધારે કે કરે પણ કુદરત કદી

સાંખતી નથી. માણસ ન્યાયનો અન્યાય કરે તો ભલે પણ કુદરતના ન્યાય ખરાખર થાય છે. એક ઠેકાણે કહ્યું પણ છે કે—

અન્યાયોપાર્જિતં દ્રવ્યં, દશ વર્ષાણિ તિષ્ઠતિ ।
પ્રાપ્તે ષોડશે વર્ષે, સમ્મૂલં ચ હિ નશ્યતિ ॥

૨-લંગોટનો સાચો-એટલે કે જેને પર-જીનો ત્યાગ છે તે માણસ ઉચ્ચતા ને આદરની દૃષ્ટિથી જ્ઞેયાય છે. ને તેને સારા સારા ખાનદા-નોના કુટુંબોમાં પણ હરવા કરવા ને જવા આવવાની છુટ હોય છે. જે વ્યભિચારી હોય છે તેને અનેક રીતે પૈસા ઉરાડવા જોઇએ એટલે તે ધર-માંથી, દુકાનમાંથી કે સોંપેલા કામમાંથી હાથ મારવા ચુકનો નથી, લંગોટનો સાચો હોતો નથી, તેને ધણાંખરાં ખીજા પણ વ્યક્તન લાગુ થઇ જાય છે. ચોરી કરી એ તો તેના એક ખાસ ધંધોજ હોય છે. એથી કોઇ કોઇ વખત એ પક-ડાઇ જાય છે ને તે વખતે તેને ધણું ખમવું પડે છે. નોકર હોય તો તેને કાઢી મુકવામાં આવે છે. તેવું ચિત્ત ધંધામાં કે કોઇ ઠેકાણે ડરીને બેસવું નથી તેથી તે કોઇ રીતે તે ધંધામાં કે નોકરીને લાયક રહેતો નથી. ને તે પૈસે ટકે ખાલી થતો જાય છે, તેમ તેમ તેને વધારે મુંઝવણ થાય છે ત્યારે તે વધારે વધારે ચોરી કરી પૈસા મેળવી પોતાની ઉમેદ પાર પાડવા પ્રયત્ન કરે છે ને જ્યારે તે કોઇ રીતે શાંતી શકતો નથી ને અકળામણ થાય છે તો મરવા પણ તૈયાર થાય છે તેના કોઇ વિશ્વાસ રાખતું નથી. પોતાના ધરના માણસો પણ તેની ચિંતા કરે છે. જેને ઘેર જાય તેના ધરવાળાઓ ક્યારે જાય, ક્યારે જાય એવી બાવના રાખે છે. વળી તેના સામે આંગળી કરી “આ કાછડી છુટા છે” એમ સૌ કોઇ કહ્યા કરે છે. એવા માણસનું ધર્મકાર્યમાં તો શું પણ સંસારના દરેક કાર્યમાં ચિત્ત લાગતું નથી ને તેથી અહોનિશ ચિંતાતુર રહે છે. ચિંતામાં ને ચિંતામાં તે શરીરથી જીવાનીમાં પણ ધરડા માણસ જેવો અથવા મરેલા મડદા સમાન દેખાય છે. તેથી ઉલટું પ્રલયર્થ

પાળનાર માણસના શરીરમાં એટલી સ્ફુર્તિ રહે છે કે તેને કોઈ કામ કરવાની તક મળી કે તે એકદમ ઉત્સાહ પૂર્વક કરી દે છે. જો તેને સત્સંગતિનો લાભ મળે તો ધર્મ કરવામાં એટલે કે તપ કરવામાં, પરાપકાર કરવામાં સમાજ સેવા વીગેરેના કામોમાં આગળ પડતો ભાગ લઈ સુષ્ટિની દૃષ્ટિમાં આર્થ અને જ્ઞાન છે. કોઈ કોઈ વાર આકસ્મિક પ્રસંગોમાં પોતાના માલિકત્વ, પોતાના ધરતું કે પાડોશી આદિનું કામ ઉપાડી લઈ અહાયર્થનો પ્રભાવ જગન્નહર કરી દે છે.

લાંગોટનો સાચો એટલે પરસ્ત્રી ત્યાગી અથવા યુથાર્થમાં પૂર્ણ અહાયર્થ. એ એવો એક ગુણ છે કે તેના પ્રભાવથી નિદ્રાદેવી તેને એટલી બધી અચેત નથી કરતી કે જેટલી કામી પુરુષોને અચેત કરી દે છે. આ એવો ગુણ છે કે કોણ હિંદુ અને કોણ મુસલમાન દરેક કામ દરેક સમયમાં તેને પૂર્ણ માને છે અને બવિખ્યમાં માનશે. અહાયર્થના ગુણ જગન્નહર છે.

અહાયર્થ ગુણધારીજ આ લોકમાં ધર્મ ધન અને યશની પ્રાપ્તિ કરી પરલોકતું ભાતું કરી શકે છે. કેમકે જેનો લાંગોટ સાચો છે, તેનાં જ મગજ તર હોય છે અને ઉંડા તરવાની અને ઉંડા અને દીર્ઘ વિચાર કરવાની શક્તિ તેનામાં આવી જાય છે. ખરી વાત છે કે—

શીલ રતન સર્વમેં બડો, સર્વ રતનકીં જ્ઞાન ।
લીન લોકકીં સંપદા, રહી શીલમેં જ્ઞાન ॥

૩ જીમમાં મીઠાશ-એ એક એવો ગુણ છે કે તે ગુણ જેનામાં હોય છે તે વેરીને પણ વશ કરે છે, પરંતુ તે સાથે યાદ રાખવું કે જીમની મીઠાશ હોય એટલે ખોલવામાં મધ જેવો મીઠો હોય અને અંદરખાનેથી મેલો હોય તો તેવી મીઠાશની અપેક્ષાએ તો કડવું ખોલનારા પણ સારા છે. કહ્યું પણ છે કે—

મન મેલા તન ઉજલા, કપટી કાયા જઙ્ગ ।

इससे ती कौआ भला, तन मन एक ही रङ्ग ॥

એટલે ઉપરથી મીઠું ખોલનારાથી તો માણસ ઘણી વખત થાપ ખાઈ જાય છે ત્યારે કડવું ખોલનારાથી તો માણસ ચેતીને ચાલે છે. તેથી ઉપરની મીઠાશ કંઈ કામની નથી. ખરી રીતે તો જેની જીમમાં મીઠાશ છે, તે અંદરથી પણ તેવોજ કામળ ને ચોખ્ખા દીલનો હે વો જોઈએ. શસ્ત્રોમાં ૪ પ્રકારના માણસ બતાવ્યા છે. ૧ ઉત્તમ મનુષ્ય એ છે કે જે ઉપરથી ને બહારથી એક સરખો મીઠો, કામળ ને ચોખ્ખા દીલનો તે દ્રાક્ષ સમાન છે. ૨ મધ્યમ મનુષ્ય, એ છે કે જે ઉપરથી કઠણ પણ અંદરથી ચોખ્ખો ને કામળ તે શ્રીફલ (નારી-ચલ) સમાન છે કેમકે તે ઉપરથી બટુક ખોલો લાગે પરંતુ પરીપાક કાળે તે હિતકારક હોય છે.

૩-અધમ મનુષ્ય તે છે કે ઉપરથી મીઠો પણ અંદરથી મેલો તે બદરીફલ કહેતાં ખેર જેવો હોય છે એટલે કે ઉપરથી વર્તમાન ને ખોલવામાં બલાઈ ખાસે છે, પણ અંદરથી સાર વિનાનો હોય છે. ૪ અધમ-અધમ મનુષ્ય એ છે કે જેના ઉપરથી બટુક ખોલા તેવાજ અંદરથી પણ કઠોર હોય છે એટલે તે પુંગીફલ એટલે સોપ રો સમાન છે, તેથી જેના હૃદયમાં કામળતા છે તેના જીમની મીઠાશ સોનામાં સુમધીતું કામ કરે છે.

એકંદર રીતે મીઠું ખોલનાર કોઈને અભાવતો થતોજ નથી. તે માણસ સર્વેને પ્રિય લાગે છે. અને તેને ગમેતેવું કામ હોય તોપણ તે પી જઈને પોતાના બનાવી લઈ તે પોતાનું કામ સહેલાઈથી કરી શકે છે. તેનો કોઈ દુસ્તન હોતોજ નથી. જીમની મીઠાશ એજ ખોલવાની સખ્યતા છે જીમની મીઠાશ ન હોવાને લાધે તો કેટલક નિઃસ્વાર્થી સેવા કરનારા હોવા છતાં તેમના ઉપર સમાચાર પત્રોમાં કટુક ને તોછડા શબ્દોની ભરમાર કરી પોતાનું હેયું ખાલી કરી દે છે જીમની મીઠાશ ન રાખનારા એટલે તે બટુક ખોલનારા સર્વે કોઈને ખારા અગર સમાન લાગે છે, એવું ખોલનારા વાત વાતમાં શબ્દ શબ્દમાં વઢી પડે છે, કરાંઝીને, વતણીયાં ખાંધને, તપાં જાંધને, હચુકા હાકોટાથી ખોલનારા કે હલકા શબ્દોનો પ્રયોગ

કરનારા સમયપર તિવાહની વરસી કરી મુકે છે. તેવા માણસોનો કોઇ સાથ કરવા ઇચ્છા ધરાવતું નથી. તેની સાથે ધંધામાં યાત્રામાં કે તેમનું જ બહુ કરવામાં યોગ ધરાવતો નથી. કદાપિ તેના સાથે અબજુપણે કે ભોગજોગે સંમંધ અન્યો હોય તો લઠી બાઝીને છુટા પડવાનો પ્રસંગ આવે છે. એમ તો સર્વે કોઇ કહે છે કે “ જીભમાં જ મીઠાશ છે અને જીભમાં જ ઝેર છે ” અને વાત પણ અક્ષરશઃ સત્ય છે પરંતુ એમ ગુણને જાણનારા અને એનો અનુભવ લેનારાજ તેનું પ્રાયઃ પાલન કરી લાભ લઇ શકે છે.

મીઠાશથી બોલનારાજ દુકાનની અંદર પોતાના ધરાકોને સારી પેઠે પલ્લી શકે છે. મીઠાશથી બોલનારાજ ધરમાંના ખાનગી અધડાનો અથવા બહારના અધડાનો સહેલાઈથી અંત લાવી સમાધાન કરી શકે છે, મીઠાશથી બોલનારાજ પ્રાયઃ પોતાના મનને દયાવી કાણુમાં રાખી શકે છે. ટુંકમાં મીઠું બોલનારા ધારે તો આ લોકમાં ધન અને યજ્ઞની પ્રાપ્તિ કરી પરલોકને માટે યથાયોગ્ય ધર્મસાધન કરી શકે છે. ખીજા બધા ગુણો હોય પણ આ એકજ ગુણ ન હોય તો તેને તેના કામમાં ધણી અગવડતા ભોગવવી પડે છે એટલું જ નહિ પરંતુ તેના ધણાખંચ ગુણુ ઠંકાઈ જાય છે તે તેની પ્રશંસાના બદલામાં નિંદા થાય છે. દૃષ્ટાંત- તરીકે જુઓ-કાગડાએ કોઇનું બગાડયું નથી તે કાયલે કોઇને કંઈ આપ્યું નથી. પણ એક તેની બોલવાની મીઠાશને લીધે જ હર સૌ કોઇના ચિત્તને હરણ કરે છે. આ એકજ ગુણથી જ્યારે માનવને સુગમ પડે છે અને લાભ કર્તા છે ત્યારે જ્યાં ઉપરોક્ત ત્રણે ગુણો હોય ત્યાં તો પછી જગતમાં તેનું સન્માન થાય એમાં કંઈ નવાઈ નથી. મનુષ્યોમાં મનુષ્ય બનવા માટે પ્રથમ આ ૩ ગુણુ અવશ્ય અવશ્ય હોવા જોઈએ. એ ૩ ગુણુ વિના જે માણસો પોતાને ઉચ્ચ ધારવા હોય કે પોતાને યોગ્ય સમજતા હોય તો પોતાના દીવથી ગમે તેમ સમજે પરંતુ રુજીનોની દૃષ્ટિમાં તે ઉપરોક્ત ગુણુ વિના વધારે કેળવાયલા સુધારાના શિખરે પહોં-

ચેલા અને ફેશનની શીક્ષીઆરીમાં ફસેલાઓની વધારે માન્યતા નથી એટલું જ નહિ પણ તેઓની કદર એટલી થતી નથી કે જેટલી એક સાધારણ સ્થિતિવાળા પણ નીતિમાન, ધર્મતા, પરોપકારીની કદર થાય છે. જગતમાં ગુણુની જ પૂજા અને ગુણુનો જ મહિમા છે. ગુણુ વિનાનું જેમ મેં મ- રત્નું કુલ બહુ સુંદર દેખાવા છતાં નકામું છે. તેમ ધણા બહુલા હોય પણ નીતિ રીતિમાં ન ચાલતા હોય, પરોપકાર ગુણુ ન હોય, ચારિત્ર સદાચરણને તિલાંજલી આપી હોય તો તે બહુવું પણ વ્યર્થ છે. દૃષ્ટાંત તરીકે જેમ “રસોઈ બોલ- નના અર્થે હોય છે તેમ જ્ઞાન પ્રાપ્તિ ચરિત્રને અર્થે છે.” અર્થાત્ બહુવું તે આ જગતમાં જીવન યાત્રા સુધારવા માટે છે. અથવા જીવને શીવ બનાવવા માટે જ છે. કોઈ મહાંત પુરૂષે કહ્યું છે કે ડોક્ટર કે વેરિષ્ટર વીગેરેની ઢીપ્રીઓ મેઢવ- વામાંજ કેઢવણીનો હેતુ પાર પડતો નથી, પરંતુ સમાજ સેવા અને તેથી અધિક આત્મ શ્રેય કરવા- માંજ કેઢવણીનું તત્વ સમાયેલું છે. માટે આ ઉપ- રના કથનને ધ્યાનમાં રાખી જે કોઈ પ્રથમ કહેલા ૩ ગુણુને ધારણુ કરશે તો તે સાચા માનવ સમા- જની ગણુત્રીમાં ગણુશે તે સ્વપર ઉપકાર કરી શકશે, એ જ આ તુચ્છ લેખનો સાર છે.



ઉત્તમ ઉપદેશ ।

૧-ઉસ ईश्वरकी सेवा करनी चाहिये जो सर्वज्ञ हो, वीतराग हो-जिसको न किसीसे राग न द्वेष हो और जो ८ मूलगुण, ११ व्रत, १२ प्रकारके तप, ४ प्रकारके दान, रत्नत्रय, समता भाव, जलगालन विधि, रात्रिभोजन इन १३ (८+१२+११+४+३+३) क्रियाओंसे भूषित हो चाहे वह जिनेन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु,

महेश, बुद्ध, इसाई और यवन भी क्यों न हो ।

२-पच परमेष्ठीकी दो माला दिवसमें दो समय अवश्य जपनी चाहिये ।

३-स्नान सदा प्रातःकाल गरम और स्वच्छ जलसे करना चाहिये चूंकि हमारे शस्त्रानुसार स्नान धर्मका एक अंग है ।

४-स्नान बने वहांतक नदि या तालावपर ही करना चाहिये ।

५- भोजन करनेके पूर्व अपने ईश्वरका स्मरण करना चाहिये और पूर्ण होनेपर घन्यवाद हो ।

६-भोजन नियमित समयपर और खुब चबा २ कर करना चाहिये ।

७-घंटी बजे तब भोजन नहीं करना चाहिये जब भूखकी घंटी बजे तो भोजन करना चाहिये ।

८-दंतधावन सदा नीम या बबूलके दातोनसे करो और इन वस्तुओंको मिला करना चाहिये ।

चाक मिट्टी-बादामके छिलकेका कोयला, लवण ।

९-प्रातःकालमें थोड़ा २ नाकसे ठंडा जल पीनेसे गरुड़के समान तीव्र दृष्टि होती है और ब्रह्मपतिके समान बुद्धि होती है ।

१०-जिस प्रकार सीने, बुनने तथा अन्य मशीनोंको साफ करनेकी और संभालनेकी आवश्यकता है उसी प्रकार शरीररूपी मशीनको साफ और संभालनेकी आवश्यकता है ।

भुरालाल जैनी ।

अहिंसा ।

(लेखक पं० प्रेमचंद पंचरत्न, भिंड)

प्रिय वाचको ! हमारे पूर्वाचार्योंने अहिंसा (दया) का स्वरूप इस प्रकार दर्शाया है-

दया मूलो भवेद्धर्मा, दया प्राणनिकंपनं ।
दया या पररक्षार्थं, गुणा शेषा प्रकीर्तितः ॥

अर्थात् दयाका लक्षण सम्पूर्ण प्राणियोंकी रक्षा करना बताया है, तथा दया ही धर्मका मूल है और जो दया दूसरोंकी रक्षाके लिए की जाती है उसके द्वारा कीर्ति आदि उत्तम गुण प्रगट हो जाते हैं ।

इसी लिये जिसकी प्रशंसा पूर्व-आचार्योंने अपने मुक्त कंठसे की है, ऐसी दया (अहिंसा) को कौन ऐसा पापात्मा होगा जो ग्रहण न करे, क्योंकि जिसके द्वारा हम पराये प्राणोंकी रक्षा कर सकते हैं, जिसके द्वारा हम दूसरोंको सताना महा पाप समझते हैं, जिसके द्वारा हम दूसरोंको निर्भीक बना सकते हैं, जिसके द्वारा हम अन्यायियोंका अन्याय सहन कर सकते हैं, जिसके द्वारा हम शत्रुको भी अपनाते हुए अपना प्रेम उस पर प्रकट कर सकते हैं, और जिसके द्वारा हम अनेकानेक हिंसामय विघ्न आते हुए भी अपनी धार्मिक नीतिका उल्लंघन नहीं करते वह केवल एक अहिंसा ही है ।

अहिंसा प्राणी मात्रकी हितैषिणी देवी है । वह अपने भक्तोंको सदैव अभयदान देती है ।

जो मनुष्य उसका ध्यान करता है, वही सब जीवोंका सच्चा बंधु है और उसका धर्मसे पक्का रिस्ता है । जिस किसीने अहिंसा देवीका शरण लिया उसीने क्रोध, मान, माया, मत्सर, आदि शत्रुओंको जीत लिया और उसीने अपने आत्माको संसारके बंधनसे मुक्त करनेका यथार्थ प्रयत्न किया, क्योंकि नीतिमें कहा है—

धर्म यस्य तस्य लिङ्गानि, दमः शान्ति अहिंसतः ।
तपो दानं च शीलं च, योगो वैराग्यमेव च ॥

भावार्थ—अहिंसा धर्मका एक मुख्य चिह्न है, तथा उसके तप, दान, शील, योग, वैराग्य और और दमः (इन्द्रियोंको बश करना) आदि गुण हैं । ऐसा ज्ञान अहिंसादेवीका भक्त क्षमा, संतोष और शान्तिताका उपासक होता है । उसे कोई कितना ही सतावे कितना ही दबावे परन्तु वह किसीको भी सताने दबानेका इरादा नहीं करता और न किसीका बुरा विचारता । वह सदैव ही दूसरोंके दुःख दूर करनेका प्रयत्न करता रहता है, क्योंकि पक्का अहिंसावृत्ति है । क्योंकि—

जो नरोत्तम वृत अहिंसा धारता ।

वह सदा परकी भलाई चाहता ॥

कोई कितना ही उसे दुतकारता ।

किन्तु सबपर वह क्षमा ही चाहता ॥

वर्तमान समयमें गांधीजी संसारमें सबसे बड़े महात्मा समझे जाते हैं, जिनको सभी धर्मावलम्बी भली भांति चाहते हैं, और उनके सिद्धान्तोंका पालन करते हुये देशको धार्मिक तथा स्वतंत्र बनानेके लिए हजारों लोग राज्य-नतिक क्षेत्रमें उतर, शान्तिताकी लड़ाई लड़ रहे

हैं । क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या जैन, क्या आर्य, क्या ईसाई, और क्या पारसी, सभी महात्मा गांधीके व अहिंसाके अनुयायी दिखाई देते हैं ।

महात्माजीका उपदेश है कि—जो तुमको सताता है सताने दो, किन्तु तुम उसके सतानेका बदला "सहनशीलता" दो । तुम्हारा सहनशील गुण उसको यथार्थ रास्तेपर लावेगा, तब यही तुम्हारे द्वारा उसका उपकार होगा । हमारे न्यामत कवि भी बताते हैं कि—

अपनीसी जान जानिये औरोंकी जानको ।
न्यामत किसीके दिखको दुखाना नहीं अच्छा ॥

अतः जिसे तुम सतावोगे वह तुमको सता-
वेगा । जिसे तुम हंसावोगे वह तुमको हंसावेगा ।
इससे तुम अपने प्राणोंकी तरह सबके प्राण
समझो । किसी भी जीवको दुखानेका इरादा मत
रखो । सुनो—

सताता है जो गैरोको

वो खुद आपद बुलाता है ।

हंसाता है जो गैरोको

वो खुद खुशियां मनाता है ॥

जो अहिंसाव्रती है, वह हिंसोत्पादक कारणोंसे सदैव बचता रहता है । वह जो कार्य करता है हिंसा रहित करता है—उसके परिणाम कभी हिंसामय नहीं होते । लाख, जहर, आदिके व्यापारका उपदेश नहीं देता और न करता । व्रती मिथ्या मुद्दमा नहीं करता ।

अहिंसा व्रती अशुद्ध चर्ची मिश्रित मिलोंके वस्त्रोंको उपयोगमें नहीं लाता । वह तो अपनी देशी शुद्ध खादीको स्वीकार करता है जो कि सब प्रकारसे शुद्ध है ।

अहिंसाव्रती ऐसी झूठ नहीं बोलता जिससे दूसरोंपर विघ्न आ जावे तथा प्राण दंड मिलनेकी शंका हो ।

और न वह अपने व्यापारिक कार्योंमें झूठकी शरण लेता, वह किसीकी वस्तु धोका देकर नहीं ठगता, किसीको कमती नहीं देता और न बढ़ती लेता, लेने देनेको तराजू बांट हीनाधिक नहीं रखता, क्योंकि व्यापारमें झूठ बोलनेसे, ठगनेसे, हिंसाका पाप लगता है ।

सारांश यह है कि दूसरोंके दिलका दुखना ही हिंसा है तो क्या अपने स्वार्थके लिए झूठ बोलने और ठगनेसे हिंसा न लगेगी ? अवश्य लगेगी । इसलिये हमको चाहिये कि हम निम्न कविताके भावको समझ अहिंसाका आदर करें—

यदि हम अहिंसा धर्मसे सम्बन्ध करना चाहते ।
तो क्यों नहीं नीचे लिखे दोषोंको शीघ्र निवारते ॥ टेक
व्यर्थ परको कष्ट देकर चाहना अपना भला ।
झूठी गवाही पेश करके फांसना परका गला ॥
यदि हम अहिंसा सलिल पीकर शांति रहना चाहते ॥ तो ०
व्यवसाय वह अति नियम है जिसमें समाई झूठ है ।
अरु ठगरहे परद्रव्यको एक दिन मचेगी लूट है ॥
यदि हम अहिंसा मार्गपर, परको खलाना चाहते ॥ तो ०
हैं मिलोंके वस्त्र सारे अशुचि चर्बीसे सने ।
उन्हें ला उपयोगमें हम धर्मके धारक बने ॥
यदि हम अहिंसा धर्मका झंडा फहराना चाहते ॥ तो ०
प्राण हरना दिल दुखाना कौनसा यह पाप है ।
भै तो कहूंगा बस वही हिंसा भयानक ताप है ॥
“प्रेम” की अर्जी यही जो दुःख हरना चाहते ॥ तो ० ॥

बोलो अहिंसा धर्मकी जय ।

समयोपयोगी शिक्षायें ।

(लेखक-पं० जयचन्द्र जैन शास्त्री-कलकत्ता)

१—ब्राह्म मूर्हर्तमें उठना समस्त रोगोंका नाशक है ।

२—सुख नींद सोनेसे मन प्रसन्न रहता है, बुद्धि निर्मल रहती है, पदार्थका ज्ञान बड़ी सरलताके साथ होता है ।

३—प्रातःकालमें शय्यासे उठते समय अपना मुख घी या दर्पणमें देखो ।

४—प्रातःकालमें रजस्वला स्त्रीको अंधे, लंगड़े, लूले, कुबड़े आदि विकल अंग वालोंको नहीं देखना चाहिये ।

५—नित्य दन्तधावन नहीं करनेवालेके मुखशुद्धि नहीं होती है ।

६—कार्यकी बाहुल्यतासे शारीरिक कर्मोंको नहीं रोको ।

७—वीर्य, मल, मूथ, वायुका वेग इनका रोकना अश्मरी, भगंदर, गुल्म, बवासीर आदि रोगोंका कारण है ।

९—प्रातःकालमें गौओंके छूटते समय व्यायाम रसायन समान फल देती है ।

१०—शस्त्र और वाहनके अभ्याससे व्यायाममें सफलता करनी चाहिये ।

११—जब तक शरीरमें पसीनेका उदय नहीं हो तब तक ही व्यायामका समय है ।

१२—शारीरिक बलसे भी अधिक व्यायाम करना रोगोंका घर तैयार करना है ।

१३—व्यायाम नहीं करनेवालोंके अमिक्का उद्दीपन, शरीरमें दृढ़ता, उत्साह और निरालसता कहाँसे हो सकती है ?

આજના અંકનો વધારો. હાલ તરતમાં મંગાવી લેનાર પાસે રૂ. ૨ ચોછા લેવાશે.

શું તમારે પૈસાદાર થવું છે ? જો થવું હોય તો જ વાંચો,

દેશનો ઉદ્ય ક્યારે માથે લ્યારે કેમ હુન્નર ઉલોમનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી સ્વતંત્ર ધંધા કરતો માથ ત્યારે તમે નોકરી માટે વધારા મારતા હો છતાં ન મળેતો મહારાશી નહીં, તમારી પાસે મૂડી ન હોયતો મહારાશી નહીં, તમારી પાસે પૈસા ટકા ન હોય તો અમુકાશી નહીં. તમારી તમામ સુકવણ દરકરવા માટે આજેજ

ધનવૃદ્ધિ

અને

પૈસાદાર થવાના ઉપાય

(ચોથી આવૃત્તિ)

આ પુસ્તક મંગાવો. તે તમને પૈસા શી રીતે કમાવા તે લાગવાડી, તમે નોકરી ધંધા કરતા હશે તોપણ તે ઉપરાંત બીજું દ્રવ્ય કમાઈ શકો તેવા હુન્નરો માર્ગો બતાવશે. આ પુસ્તકમાં વેપાર કેમ કરવો, વગર મૂડીએ વેપાર કેમ લાગવો, હુન્નરો નવા નવા હુન્નરો ધેર કોઈ શી રીતે કરવા, ખેતીવાડીમાં કેવી રીતે કમાવું વગેરે અનેક ઉપાયો તમને કીમવાડશે. તમારા ધંધા ઉપરાંત આમનિ કાંઈ એક જ પ્રયોગ હાથ કરી લેશો તો તમે વગર મહેનત મલુમીએ, મૂડી શક્યા વગર, ધેર કોઈ તમારો ધંધા કરવા છતાં હુન્નરો રૂપિયા મેળવી શકશો.

આ પુસ્તક પ્રજામાં એટલું મધુ લોહમિય થઈ પડ્યું છે કે તેની યોગ જ વખતમાં ત્રણ આવૃત્તિમાં હુન્નરો નકલો આપી મધુ છે અને આ ચોથી આવૃત્તિ હમણાં જ થયા હવારા વધારા સાથે બહાર પાડી છે આ પુસ્તકવડે અત્યાર સુધીમાં હુન્નરો માલુસો કામ ધંધા લાગ્યા છે અને જેમને લેખાના અન્નની પણ તાણ પડતી હતી, જે પાંચ સાત કે દસ પંદર રૂપિયામાં આખો દીવસ નોકરી કરતા હતા તે અત્યારે હુન્નરો રૂપિયા મેળવી સુખમાં જીવે છે. તમારે પણ જે રહેલાઈથી હુન્નરો રૂપિયા મેળવવા હોય તો આજેજ આ પુસ્તક મંગાવો.

આ પુસ્તકનો અનુભવ કરી હુન્નરો માલુસોએ સુખી થઈ અને અનેક ક્ષિપ્તિ આપ્યા છે. તેઓ- માનના અત્યારે થયા પૈસાવાળા થયા છતાં પણ અમારો મુજબ જુલતા નથી. કેટલાક તો આ પુસ્તકને પોતાના પત્ની માટે સાચી રાખે છે. આ પુસ્તકમાં જે જે વેપારના, હુન્નરના અને ખેતીવાડીના પ્રયોગો આપ્યા છે તે ધેર બની શકે તેવા છે. થયાએ તેનો અનુભવ કર્યો છે. તેમાંના કાંઈ જે આર પ્રયોગો જ તમે હાથ કરી લેશો તો પછી તમ કદી પૈસાને માટે વધારા નાક મારો-તેથી અંદર એટલા ધંધા પ્રયોગો છે કે જેનું અમે સાવસ્તર વર્ણન કરવા બસીએ તો બીજુ પુસ્તક લખાય, જેથી માત્ર હુન્નરોમાં જ હકીકત આપીએ છીએ. તેમાં તેર લાગણે રૂ. ૧૫૦ ઉપરાંત પ્રકરણો છે અને ત્રણ હુન્નર ઉપરાંત પ્રયોગો છે.

ભાગ ૧ લો—ધનનું મહત્વ, ધનની આવશ્યકતા, પૈસાનું મહત્વ વગેરે.

ભાગ ૨ જે—ધનવાન થવાને માટે ચોખ્ખતા પ્રાપ્ત કરવી, ધીરજ, પરાક્રમ, સિદ્ધિને મુજ મંત્ર વગેરે

ભાગ ૩ જે—લાભ પ્રાપ્ત કરવી—વધાની શોધ, ક્યો ધંધા લાભદાયક થઈ શકે.

ભાગ ૪ થો—નોકરી જુદા જુદા સ્થાનોથી જુદી જુદી નોકરીઓ પ્રાપ્ત કરવાની રીત.

ભાગ ૫ મા—વેપાર કરવાના કાયદા—વેપારી, માલદો વવારવાની રજા, મુડી ધીરનાર, મિલ-

કત શી રીતે વધારવી, હુન્નર ઉલોમની વૃદ્ધિના સાધનો, ક્યા ઉલોમો ખીલવવા, વેપારને મદદ કરનાર, સાધનો, અચાનક માલ શી રીતે એકઠો કરવો. નાણું, નવાન શોધ, નવા નવા ઉલોમો, સદાનો ધંધા તેમાં ધારેલી આજી શી રીતે સધાય, લાન ધેરનો ધંધા, નાણાવટીના ધંધા, તેમાં કાયદો શી રીતે મેળવવા

ભાગ ૬ ઠો—ખેતી—ખેતીનાં સાધનો, ખેતીનો કસ શી રીતે વધારવો, ખેતીની ઉત્પાદક શક્તિ વધારવાના આતર, ખેતીનો સુખ્ય પ્રકાર, આતર સંબંધી પ્રયોગો, ખેતી સંબંધી પ્રયોગો, વીસ પચીસ થણો પાક ઉતરે તેવા આતરના પ્રયોગો તે માટે કરવાનું અનાજનું વાવેતર, ઘઉં, ડામર, બાબરી, જીર, તુવેરો વગેરે, તલ, અળસી, મગફળી, દીવેલા, તમાકુ, કેરી, જીં, છાં, મેથી, ધાણા, વરીયાળો, સવા, ડુંગળી, ઘસણ, કાકમ, શેરડી, કપાસ, સજી વગેરેને ધાર્યા કરતાં વીસ પચીસ થણો પાક ઉતરે તેવી રીતે વાવેતર કરવાની તથા પકવવાનો નવીન શોધ. હાંમ, જોળ, ખાંડ, સાકર બનાવવી વગેરે.

ભાગ ૭ મા—ખનીજ પદાર્થોથી ધનની વૃદ્ધિ, ધાતુ, તેમાં તેનું રૂપું, લોહું, તાંબુ, પીતલ, કાંચકી અમરુ, સ્વેદનો પથ્થર, પ્લાસ્ટર ઓફ પેરોલ, વીજેરની શોધ તથા તેણે બનાવવાની રીત.

२ **भाग ८ मे**—अवेरातने वेपार, होरा, भाषेक, शनीश्वर, पुभराज, भीसती, धमीटे शन, माषेक
नीजर पारभवानी अने वेपार करवानी रीत, हीरागाथी छांटे हाडवानी रीत, मोती कुहरती मोती, ज्येभवानी
मोती, अनावटी मोती, मोतीना सुख मोती विधवानी रीत, मोती ही रीते सुधारना, मोती धोवानी रीत.

भाग ९ मे—कुन्नारडोळाम तेभा तसाम प्रकारना रज अनाववानी रीत; सईद, बाब डीरम-
७. लीला, पीला, बन्धु वीजेरे रजो रक्षाभनिक रीते अनाववानी कणा हाथीहात, रेखमी कपडा, उनना
सुतरना विजेरे कपडानि लुदा लुदा रज अनाववानी विद्या. काजण अनाववानो उद्योग—जेभा
अपवाना, अभवाना, काजणे, लडा तपता, पाथीसपेपर, कायने उद्योग—जुही जुही नतना काय अना-
ववाना प्रयोगो. आभडानो उद्योग—आभडानि शुद्ध करवानी, पकववानी तेना पर लुदा लुदा रंग यहा-
ववानी रीत, साखु अनाववा—उसगाथी साखु अनाववो, अरणीना, केकमना तेवतो, कापरदेवतो जेरंडी-
यानो डोणीयानो, राजनो साखु अनाववानी रीत, काणा रजने साखु सईद अनाववो; पापडीआ भार-
गाथी अनाववो, अर्धा कलाकमा साखु अनाववो, ज्येसाराधन हाडवानी रीत, आगोडीन, टेनीन, डीसेन्डेकट,
दार, मरक, आरसोप, वीन्डसर, हीनातो, बेसन, कपडानो, नारंगी, कागोलीक, हनी सक्कर, पारदर्शक दाब
हाडवानो साखु अनाववानी रीत, धोवतो पावडर, साखुनो अर्ध अनाववो, वीजेरे मीसुअति अनाववानी
क्रिया अने तेनी अनावट. इटोआकर अनावानो ज्यो; जेरा वीजेरेनी समज्जु, इकरस मेणवी इटो पाड-
वानी रीत; कायने दवाथी धोवानी रीत, दवाजो, काय उपरथी इटो काजण उपर इवी रीते उतारवो,
काजण उपर उतारेवा इटाने दवाथी धोवानी रीत तथा तेनी दवाजो तेने तयार करवानी रीत वीजेरे;
झीमेन्ट अनाववानी क्रिया—जुही जुही नतना अनेक प्रकारना झीमेन्ट अनाववानी जुही जुही अनावटो.
वारनिक—दरेक प्रकारना वारनीक अनाववानी अनावटो, काय अनाववानी क्रियाजो, झाडी—जुही जुही
नतनी अनेक प्रकारनी झाडी अनाववानी रीत जेभा तसाम प्रकारनी अपवानी, अभवानी; झाडीजो,
कपडा के हाकडा विजेरे पर अभवानी अयररोम्पनी, परमेन्ट झाडी, हाउपराधरनी झाडी. वीजेरे अनेक
नतनी अनावटो. अटने—तसाम प्रकारना अटने अनाववानी अनावटो. दीवासणीजो—दरेक नतनी
अनाववानी क्रियाजो, सातु अने र्धु अनाववाना अजलम ४० प्रयोगो, अनावटी धातु अनाववी. धातु विजेरे
साधवानी, तेनो रस करवानी क्रिया, रजु विजेरे धातुजो धोव पाथीस करवी, तेना उपर अक्षरों कातरवानी
रीत. धातु उपर वीजणीनी महद वडे भीमेट अनाववो. वीजणीनी मेटरी अनाववी. वीजणीने उत्पन्न
करवी, गीलेट करवानी सोनेरी अने र्चेरी जुडी अनाववानी रीत, हाकडानि रंगवाना तथा तेनो अनावटना
केटलाक प्रयोगो, हाथीहात जेवुं हाकडुं अनाववुं हाकडाना वहेरनी वस्तुजो अनाववी. अणुनसना हाकडा
जेवा हाकडा अनाववा, हाथीहातने साधवानुं मिश्रण, पाणीथी पलणे के अग्निथी अणे नाह तेवा हाकडा,
शुवळतुजोने दुर करवा, साप, उदर, अकषु, विषैव, कोडी, मन्कर अता अटकाववा अने होय तो दुर
करवाना तथा हरी आवे नाह तेना उपायो, अनाज सवे नाह तेना उपाय. अनाजभां शुवडां न घटे तेना
उपाय, हाकडां सवे नाह तेना उपाय, काप पक्षु वस्तु उपरथी दाब हाडवा, सुतराई, रेखमी उनना, मभ-
मखना के दरेक नतना कपडा, लोडुं, सोनेरी काजण उपरथी खीकणी झाडीना के डामर, मेख, अरणी विजेरे
अने तेना दाब हाडवाना प्रयोगो, रजोला कपडा धोवा, मोती उपरथी दाब हाडवा, सोना इपानी ज्येसो
उपरथी दाब हाडवा, काय, आरसपहाय; हाकडां, शरीर, लोभक, तरवार, इटो विजेरे दरेक उपरथी दाब
हाडवानो तथा तेने धोव साह करवानी रीत, जेज पारभवानी रीत—इधमां, पाणीभां, जेरनो, सातुं
यादी, धातु. तेव, वी वजेरे दरेक खीजगाथी जेभ पारभवानी रीत, कटलीक सुभधीवाणी अनावटो, अजर-
अती, धुप, अरास वजेरे अनेक खीजेनी अनावट, कंठ, अणीज, गुलाब. काथो ज्येगीयो वजेरे अनाववानी
रीत, दुधनी जुडी करवानी रीत, अनावटी वस्तुजो अनाववानी रीत, अनावटी आरसपहाय, पत्थरो
अणुनसना हाकडां, हाथीहात. आमडां, मध, हांगोलाक, केसर, करतुरी क्वाथं, हीरा, नीलम, मोती, भाषेक,
पोभराज, पना, अडीक, कपास, रेखम अनाववानी रीत, खरीरने स्वच्छ अनाववानर—गेरा अनाववानर
प्रयोगो, पील दुर करवाना, माडां दुर करवाना, जुडडाना दाब हाडवाना, शीतणाना माडां दुर करवाना, आमडी
मुहर काय तेना उपाय, अरी जता वाण अटकावकना, वाण वधारवाना, वाण काणा करनार कसयो, वजेरे अनेक
अनावटो. आभसकीम अनाववा, लीजु, गुलाब, दाक्ष वजेरे दरेक नतनुं अरअत अनाववानी रीत. अरअत
तयार करवानो पावडर. आसणी वजेरे अनाववानी रीत, अतरा अनाववां. गुलाब, नारंगी, सुभड, केवडा,
अंअर वजेरे अने ते पुखगाथी अतर हाडवानी रीत, सुभधी तेवो अनाववानी रीत, जेभा गुलाब, लध
अणेबी, मोजरो, कपुर, लोआन, अक्षम, कापरदेव, तज, लवीज, खीवारस, अयकण, नागरमोय, अस वजेरेना
तेव हाडवानी अनावटो, धडीआणमां पुरवानुं तेव; केकने वधारनार तेव, वाण उगाडनार गुलाबी तेव,
हेरजोअंभ, कापरदेव शुद्ध करवानी रीत, जुही जुही नतना हेरजोअंभ अनाववानी रीत—तेनी वस्तु-

જીના વબન, લવંડર, કોલન વોટર, ફ્લોરીડા વોટર, હિરોયન વોટર, આંદ્રાહી અંબરાજ ફાવર, કે વોટર, ગુલાબજળ, આરજવાટર વગેરે અનેક અનાવટો, સોડા લામીનેડ, સોડાલેટર લેમોનેડ વોટર, ટોનીક વોટર જીંજર અનાવવાની રીત, તેના પાવડર અનાવવાની રીત, જુદા જુદા જાતના બ્લિસ્કોટ અનાવવાની રીત, જાક્યુ અનાવવા-સુગંધી કરતુરીની મદાસી વગેરે અનેક જાતની તપખીર અનાવવાના પ્રયાગો. મીથુ કાપડ અનાવવાની, પાળા માંજુન સફેદ કરવું, તંબુ કે ફેનવાસ પાણીમાં ન પહોંચે તેવા કરવાના વગેરે અનેક પ્રયાગો. અનાવટી સ્લેટ અને પેન્સીલ અનાવવી ફેડવાનું દાકખાનું અનાવવાના અનેક પ્રયાગો જાનુક સાપના સળાઓ અનાવવી, દાટેલુ ધન શોધી કાઢવાના અનેક પ્રયાગો તથા તે કર્યા દાટ્યું છે તે જાણવાની વિદ્યા, કેટલાક ચમત્કારી પ્રયાગો. દાઘ દષ્ટિ, જળપ્રવેશ મૃતસંજીવન અગ્નિપ્રવેશ, આકાશ ગમન વિગેરેના જાનુક પ્રયાગો, પાણીમાં લાકડા કરવા દેવતાને પ્રકટાવવા. રંગ ઉઠાવી દેવા. લાકડા અનાવવા, લોહા કાઢવું જાનુક દીવા, પૈસા ચાટાડવો, વગર દેવતાએ આ કે રસાઈ અનાવવી. વિગેરે કેટલાક ઉપયોગી પ્રયાગો, બીજીનો રસ ટકાવા રાખવો, સરેસ કે ચુંદરનું પાણી ટકાવા રાખવું, ગુલાબના ફુલ તાજાં રાખવા, બટાકા તાજાં રાખવા બી જાણવા રાખવા, સ્વદંશી વેદાની અનાવટ, બરફ અનાવવો. પુસ્ત આગ જોલવવી. તીકનાં છંદાં ફર કરવા શીંગડાંની શીય જેવાં બટન અનાવવા, કચકડાનાં બટન જીગડાં જેવાં અનાવવા, રબરસ્ટેમ્પ અનાવવા, દુધમાંથી માખણ વધુ નીકળે તેવા પ્રયાગો, વીજળી અનાવવા, કાનમાંથી કાંડા, માથામાંથી જુને ખોડા કાઢવાની રીત, વીજળીના અનુકી અનાવવી, આરો મુંક. પીંચર અનાવવા, સામારેટ અનાવવાની રીત, બાટીઓ અનાવવી, બસ અનાવવા, તકેતા તૈયાર કરવા, કાચ સાથે ધાતું ચાટાડવા, ફાટાન ચાટાડવાનું ભ્રમજી રામ સુધારવાના પ્રયાગો. આસના દીવા કરવા, વીજળીનું તાવીજ કરવું, દારૂ છાડાવવાના પ્રયાગો. અપ્રીજી છાડાવવાના પ્રયાગો, કપુરની માળા અને ખાલો અનાવવો, પારાનો ખાલો અનાવવાની પાંચ અનાવટો. ચીકણા સાપારી અનાવવી. મોતાને પાણીદાર અનાવવાની દવા, મસા કાઢી નાખવાની દવા, કાણુ, ઘોણું, અને ગુલાબી દંતમંજન અનાવવું, સોના વરક અનાવવાના પ્રયાગો.

ભાગ ૧૦ મો—વૈદ્યક પ્રયાગો—દરેક પ્રકારના એક્સન્સ અને અર્ક અનાવવાની રીતો, પેટંટ દવાઓ જેવી કામોનટ આઈ અમોનાઆ, કામોનિક સોડા, લાઇમ આઈસાઇડ આઈ આયર્ન નાઇટ્રેટ આઈ આયર્ન ક્લોરાઇડ આઈ આઈડ, લાઇમજ્યુસ, ખાંડનો સરકો, પોટાસ અનાવવો, ગાઉટ પીલ્સ, બ્લીસ્ટર, કાલ્કાઇન કલોરા માંકશ્વર, દાદરના મલમ, કલોરોકાર્મ કિવનાઇનની જાણીઓ, ફોસફરસપીલ્સ, આયર્ન પીલ્સ, કમ્પાઉન્ડર આયર્ન માંકશ્વર, સારપ આઈ હાઇપોફોસ્ફેટ આઈ લાઇમ, નાઇટ્રેટ આઈ પોટાસ, કવીનાઇન આયર્ન મીક્ષચર, એક્સાઇડ આઈ કોપર, પેનકાલર, કલોરોઇડન સાઇટ્રીક એસીડ, ડાવસ પાવડર કાલ્કાઇન માંક આઈ રાજ, નાઇટ્રીક એસીડ, ફલ્યુઆટીક એસીડ, ફોસફરસ ડેમીયાના ટોનીક પીલ્સ, ઇસ્ટન્સપીલ્સ, ઇસ્ટન્સસારપ, સસોપરિલા, બાલામુત, ખરજવાનો મલમ, મેથાલ આમ મેથોલ અર્ક, હેરડાઇ(ર) વાળ ધાવાનું પાણુ. બાલનાશક સાણુ. બાલનાશક તંબુ, બાલનાશક અર્ક, તાંબુલવટી, બહેરાપણાનું તંબુ, બાળા જોળા, પારાનો મલમ, કાળામલમ, સાંઠામલમ, બસજીન મલમ, ફલ્કોઈનો, માયાનો, હીરાકસીનો, દાઢેલાનો ટરપેનટાઇનનો વિગેરે મલમ અનાવવા.

ભાગ ૧૧ મો—આયુર્વેદ્ય દવાઓ, તેમાં તમામ પ્રકારના કવાસો, ચુર્ણો, ગુટિકાઓ, ગુગળ, આસવ અપલેહ, આરબ્હ જરંગો, રસા ને માત્રાઓનો સમાવેશ થાય છે. હવરાંત દરેક જાતના ક્ષારો કાઢવાની રીત પાકો સુરબ્બા, અથાણા, ચટણી વિગેરેની અનાવટો.

ભાગ ૧૨ મો—ધન પ્રાપ્તના આખ્યાત્મક ઉપાયો, જેમાં માણસ ધનવાન થઈ શકે છે ધનવાન થવા માટે કાનો આશ્રય પ્રદણુ કરવા, ધનવાન થવાના કેટલાક ઉપાયો, ધનવાન અનાવનાર માનસિક ક્રિયા. ધનવાન થવા માટે પ્રથમ પાસ કરવાની આગણીનો વિધિ. ધનવાન થવા માટે જ્ઞાનરીક ક્રિયા, ફળપ્રદ ધંધા ધનવાન અનાવી શકે તેવા નીચમો સાદાં લાજ વિગેરે.

ભાગ ૧૩ મો—જેમાં અનેક ગરીબસાધી ધનવાન થએલા પુરુષોનાં જીવનચરિત્રોનો સમાવેશ કર્યો. છે. તે વાચી ધનવાન થવા ઇચ્છનારે જ્ઞાનવા ચૈત્ત્ય અનેક વાતા જાણી શકશે.

આમાંના બધા પ્રયાગો તો ખાસ નવાન અને હવરો ફીપીઆ ખચેતાં શીખી ન શકાય તેવા ગુપ્ત હતા તે પણ દાખલ કર્યા છે. કોમિત માત્ર રૂ. ૧૦-૦-૦ પો. ૦-૮-૦ (તેર ભાગ બેગાજ છે.)

કાસાના હેડ માસ્તર ભાગવાનજી ભાણુજી લખે છે—પુસ્તક મનુષ્યને ધણુજ ઉપયોગી છે. જે માણસ તેનો ઉપયોગ કરે તે ધનવાન થવા વગર રહે જ નાંક. આમાંથી મે પાંચ સાત ફગરની અજમાયસ લીધી જેમાં હું ધણુજ ફલેમંદ થયોહું. ને આપનો આજાર માનું છું ધનવાન તે ધનવાનજ છે.

છાયાઉદ્દેપુરથી—અબ્દુલકુસેન કમશુદીન લખે છે કે—ધનવાન નામનું પુસ્તક તેની મહેનત જોતાં કોમિત રૂ. ૧૦ રાખી હોત તે પણ થોડી છે. આપે તે અનાવો દેશી લાઇખને ઉત્તેજન આપ્યું છે. આનું ગુણુ જાણું ધનવાન પુસ્તક પાસે હોય ને ધંધા કરે તે ધનવાન થઈ શકાય તેમ છે. કો. રૂ. ૧૦. આ પુસ્તક હાલ તરતમાં મંગાવી લેનાર પાસે માત્ર રૂ. ૮-૦ જ લેવાશે. અવસ્થાપક ભાગ્યોદય અમદાવાદ

નવી આવૃત્તિ સને ૧૯૨૪ સુધીની સુધારા વધારા સાથે છપાય છે.

તમારે અસહકારી થવું હોય તો પણ તમામ કાયદાનું જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવું જોઈએ. ડોર્ટ કચેરીના કામ કરવા હોય, દાવા કરવાથી કરવાની રીત જાણવી હોય તો પણ તમામ કાયદાઓ છુટા ખરીદવાથી પણ ખરચ થાય છે, તેથી જુજ કૌમતમાં તમામ કાયદાઓનું જ્ઞાન મેળવવું હોય તો આજે

કાયદાનો શિક્ષક

અને

ફોજદારી રેવન્યુ અને દીવાની કાયદાનું જુથ

(ચોથી આવૃત્તી)

મંગલો. આ પુસ્તક વિદ્યાર્થીઓ, અમલદારોમાં અને જનસમાજમાં જોઈતું બહુ લોકપ્રિય થઈ પડ્યું છે કે તેની યોગ્ય વખતમાં ત્રણ આવૃત્તિ અધી ગઈ છે. ડોર્ટ કચેરીનું કામ કરવાના, વકીલો, ડોર્ટ સાથે વાર-વાર કામ પડતું હોય તેવા માણસો તો તેને હંમેશાં પોતાની પાસે રાખે છે. કારણ કે તેમાં ફોજદારી, દીવાની અને સુદૃઢ તમામ કાયદાઓનો સમાવેશ કરેલો છે.

ધારાસભાના મેમ્બરો, કલેક્ટરો, દેશી રાજ્યના દીવાનો, ઝેરીરટરો, મેજિસ્ટ્રેટો અને જડજો તો કહે છે કે: આ પુસ્તક દરેક માણસે પોતાની દિલ્લી ખાતર હંમેશાં પાસે રાખવું જોઈએ. આ પુસ્તક પાસે હશે તો કોઈ પણ અન્યાયી અસહકારની પીક નાક રહે, વકીલોને ઘેર ઘણા ખાવા નહિ જવું પડે. તેની અંદર નીચેપ્રમાણે ફોજદારી, દીવાની ને રેવન્યુ કાયદાઓ છે. સને ૧૯૨૪ સુધીના સુધારા વધારા સાથે છે.

આ પુસ્તકમાં આપેલા કાયદા છુટા છુટા ખરીદવાથી, બસો ઉપરાંત રૂપિયા ખર્ચ થાય તેમ છે છતાં દેલકા કાયદા તો ગુજરાતીમાં મળતા નથી. આ પુસ્તકમાં અનેક કાયદાઓ છે. જેમાં પીનલકોડ પ્રોસીયરકોડ જેવા અનેક કાયદાની સાત આઠ રૂપિયા કૌમત હોય છે. તો આનો તમામ કાયદા જેમાં દેલકા પીનલકોડ જેવા તો વળી અમલની ટીકા સાથે છે તેની કૌમત માત્ર રૂ. ૧૫-૦-૦ અને પોસ્ટેજ ૧-૦-૦ રાખેલ છે. જેના સંબંધમાં ફોજદારી અભિપ્રાયોમાંથી માત્ર જુજ વર્ગો.

સુબાઈ રમૉલકોજ ડોર્ટના વડા જડજ નામદાર કૃષ્ણલાલ મોહનલાલ કવેરી લખે છે કે—કાય-દાનો શિક્ષક એ નામનું પુસ્તક મળ્યું છે અંગ્રેજીથી અનુજ એના ગુજરાતી આવૃત્તિને એ પુસ્તક ઉપયોગી થઈ પડવાનો સંભવ છે, અને હું ધારું છું કે ગુજરાત તથા કાઠીયાવાડના દેશી રાજ્યોમાં એનો લાભ સારો લેવાશે અને મેલાશે જોઈએ.

ફોજદારી કાયદા.

- ફીમીનલ પ્રોસીયર કોડ—
- પુરેપુરા અમલની ટીકા સાથે
- ઇન્ડીઅન પીનલકોડ—
- પુરેપુરા અમલની ટીકા સાથે
- ડીસ્ટ્રીક્ટ પ્રોસીસ એક્ટ—
- ક્યા એક્ટ
- વોલેજ પ્રોસીસ એક્ટ
- રેલવેનો એક્ટ
- ખાર કરનારા પદાર્થોનો એક્ટ
- વર્તમાનપત્રોનો એક્ટ
- હાનીકારક મંડળોનો એક્ટ
- જુગારનો એક્ટ,
- ફટકાનો એક્ટ; ઝેરી જાણીનો એક્ટ
- કાટકા તથા બરતના માપનો એક્ટ
- રૂમાં મેળવેલ ન થવાનો એક્ટ
- દેશીઆરનો કાયદો
- કારીબર ને સજુરનો કાયદો
- જનાવર તરફ ઘાતકીપણાનો એક્ટ

- ગ્રામવેત્તા કાયદો
- અબરો ને મેળાનો કાયદો
- વેપારની હમલખાલથી નિજાનનો કાયદો
- પ્રેસ એક્ટ
- તમાકુનો એક્ટ
- પુરાણીય વેપનસી એક્ટ
- બરકરના કુચથી મતા વહેંચાનનો કા.
- વૈદકીય ડીગ્રીઓનો કાયદો
- લેનીટરી એક્ટ
- જાપવાના પ્રેસોનો વર્તમાનપત્રોનો કા.
- ગુન્હેગારને સ્વાધિન કરવાનો કા.
- મીઠાનો કાયદો
- તારનો એક્ટ
- ગોસ્ટનો એક્ટ
- અરીથુનો એક્ટ

- સરકારી કુપી વાતોનો એક્ટ
- આખકારી એક્ટ
- મ્યુનીસીપાલ એક્ટ
- જંગલી પક્ષીના રક્ષણનો કાયદો
- પુરાવાનો કાયદો
- મહાપણાનો એક્ટ
- કારખાનાનો એક્ટ
- મેડકોહની સરતોનો કાયદો
- જંગલી પક્ષીના લોકારનો એક્ટ
- દીવાસળીઓનો એક્ટ
- લીલા કપનીનો કાયદો
- વૈદ્યનો એક્ટ
- ગુન્હા કરનારી ખતોનો એક્ટ
- પેટન્ટ તથા નમુનાનો એક્ટ
- હિંદુસ્તાનના રક્ષણનો એક્ટ
- કોપીરાઇટનો કાયદો
- કપડાનો એક્ટ
- રાજદારી ફેદોનો કાયદો

મુક્તનો કાયદો
હીલો
મુસલમાની સરેહ
કોર્ટશીનો એક્ટ
સ્થમ્પ ડ્યુટીનો કાયદો
કરારનો કાયદો
રજીસ્ટ્રેશન એક્ટ
દાનસંકર એક પ્રોપર્ટી એક્ટ
ટોટ કાચ
ઇન્ફેન્ટનો એક્ટ, ટ્રસ્ટ એક્ટ
મધ્યતત્વ લેણું વસૂલ કરવાનો કા.
સગીરના વાલી નીમવાનો એક્ટ
રીલીફ એપ્રોફલયર એક્ટ
સ્માલકોઝ કોર્ટનો એક્ટ
વારસાનું સર્વિશીફ્ટ લેવાનો એક્ટ
હિંદુ વિધવાના પુનર્લગ્નનો કા.
પારસીઓના બંનનો કાયદો
કોર્ટમાં સમ ખાવાનો કાયદો

વહેંચણુ કરવાનો એક્ટ
પ્રેલેટ તથા વહીવટની સનહનો
નાદારીનો કાયદો
મુસલમાનોને વફા કરવાનો કાયદો
હીન્દુની મિલકતની અવરથાનો કા.
હસ્તાવેજોના નમુના
ફાબ્રિકારીકોર્ટમાં કરવાની અરજી-
ઓના ને દીવાની કોર્ટમાં કરવાના
ધવા. રેવન્યુ કોર્ટમાં કરવાની અ-
રજીઓના નમુના અને તેના
જવાબો અપીલોના નમુના
રેવન્યુ અને મુલકી કાયદાઓ
લેન્ડ રેવન્યુકોડ.
(પુરુપુરા અગત્યની નોટ સાથે)
લેન્ડરેવન્યુ કોડની રૂલો
માપણીના રૂઢ
સરવધની રૂઢ
મામલતદારની કોર્ટનો એક્ટ

નરવાનો કાયદો
તાલુકદારોનો કાયદો
તોડા ગીરાથનો કાયદો
કામળના ચલણી નાણાનો એક્ટ
અધીકારીઓને નાણું ધીરવાનો કા.
સરકારી નોકરોની વરતણકનો કા.
તગાવીનો કાયદો
લોકબંકનો કાયદો
ઇન્કમેટેક્સ એક્ટ
મતાદારોનો એક્ટ
બંદરો ખાતનો એક્ટ
વહાણોનો એક્ટ
જમીન લેવાનો એક્ટ
સુતરાઉ માલઉપર જકાતનો કા.
જળમાર્ગની કરટનીડ્યુટીનો એક્ટ.
જંમલનો કાયદો
ઈરીગેશન એક્ટ
શીતળા કાઢવાનો એક્ટ

વડોદરા રાજ્યના વરીષ્ટ કોર્ટના-હાઈકોર્ટ જડજ સાહેબ, મે. રા. બા. ગોવીંદલાલ હાથી-
બાઈ દેસાઈ બી. એ. એલ. એલ. બી. લખે છે કે:—

રા. રા. જોશલાલ દેવજીર દને ફૂલ " કાયદાનો શિક્ષક " એ નામના પુસ્તકની પહેલી આવૃત્તિ
મારા જોરામાં આવી હતી. તેમ હાથમાં નવીન આવૃત્તિ પ્રાપ્ત થઈ છે. તે પછી મારા જોરામાં આવી
છે. આ પુસ્તક દરેક માણસને કાયદાની સાધારણ રીતે વ્યવહારોપયોગી માહિતી મેળવવાનું એક સાધન
પુર પાડે એવું છે અને તેથી તે દરેક જણે પોતાના ઘરમાં રાખવા જેવું છે. એકજ પુસ્તકમાં દિવાની
ફાબ્રિકારી તથા મુલકી સંબંધી તમામ માહિતી મળે એવું ગુજરાતી બાષામાં આ એકજ પુસ્તક છે, અને
સાધારણ ખાખતોમાં વહીવટને ધેર જવાની તસ્દી ન લેતા દરેક માણસ જરૂરની કાયદા સંબંધી માહિતી
મેળવી શકે એવું ઉપયોગી છે.

સુરતના મે. ડીસ્ટ્રીક્ટ અને સેસન્સ જડજ મે ચિમનલાલ જીન. મહેતા, એમ. એ. એલ.
એલ. બી. લખે છે કે:—તમારૂં પુસ્તક કાયદાનો શિક્ષક મળ્યું. તેમાં તમામ ઉપયોગી કાયદાઓનો સમવેશ
કર્યો છે. તેમાં હિંદુ અને મુસલમાન હોય પછી જેથી ગુજરાતી બહુનાર વર્ગ માટે તેમને એક સાંખા
વખતની ખોટ પુરી પાડી અને મદતવનું કાર્ય કર્યું છે. તે પુસ્તક ગુજરાતી બહુનારા વહીવટી, માજીસ્ટ્રેટો,
રેવન્યુ ઓફીસરો અને જજોને અને કાયદાના અભ્યાસીઓને વર્ણુજ ઉપયોગી થઇ પડશે. એટલુંજ નહી
પછી તે પુસ્તક એટલું બધું ઉપયોગી છે કે તેને રેફરન્સ માટે દરેક કાયદા બહુનાર માણસે પોતાના રેખા
ઉપર ઘરોજ રાખવુંજ જોઈએ. હું તમારા આ કાર્યમાં તમને ફલેહ મળે તેવું ઇચ્છું છે.

પુસ્તક ખાખ ખાખ એ માટે તાકીદે મંગાવી લેવું. કા. રૂ. ૧૫-૦

બાબોદય ઓફીસ—અમદાવાદ.

સુખી ગૃહસંસાર

જીને સુલહાની કુટુંબકથા—આ પુસ્તકમાં
૨૪ પ્રકરણોમાં સુખીકથાને ઉપયોગી અનેક ઉપ-
યોગી વીધોનો સમાવેશ છે. ગૃહસ્થાશ્રમમાંના કષ્ટને
સહન કરી શી રીતે સુખી રચતી પ્રાપ્ત કરવી તેવું
ઉત્તમ દર્શાવે છે. આઓ શી રીતે સુધરે, પતિ
સેવા, આનંદ મેળવવાનો ઉપાય, સુધારાનો સડો.
ખરો તમામ અને સુખી અવસ્થા વીજેર વિષયો રસીક
વાતો રૂપે છે. કા. રૂ. ૧-૦-૦

વહુ ઠકુરાણી

સર રવીન્દ્રનાથ કાવિરજીત-ક્રીડિયોગી અત્યુ-
ત્તમ મોષક અને રસીક વચલકવા પ્રપંચીઓનાં કા-
રસ્થાન, પિંડીયાની પ્રવૃત્તો, પતિને મદદ કરનાર
ઓનાં કામ. પ્રેમ અને આનંદથી વિજ્ય શી રીતે
મેળવવો, આખ્યાતિક છવન દેમ ગાળવું વીજેર રસીક
વાતો છે પાકુ પુકું કા. રૂ. ૧-૦-૦.

અવસ્થાપક—બાબોદય—અમદાવાદ

અંગ્રેજી, હિંદી, મરાઠી, બંગાળી, સંસ્કૃત, ઉર્દૂ, અને ગુજરાતી, બાણવા માટે

માસ્તર ઓફ નોલેજ

મંગાનો, આ પુસ્તક ઉપરથી દરેક માણસ માત્ર છ માસમાં જ થોડી મહેનતે અંગ્રેજી, હિંદી, મરાઠી, બંગાળી, ઉર્દૂ અને સંસ્કૃત શીખી શકે છે, દરેક માણસે ઉપરની બાબતો શીખવી જોઈએ, વેપારમાં તેમ મુસાફરીમાં ઉપરની બાબતોનું જ્ઞાન હોય તે બધાં ત્યાં ફાયદો થાય છે, આટલી બધી બાબતો શીખતાં વર્ષોનાં વર્ષો થાય છે, તેમ હજારો રૂપિયા ખર્ચવા છતાં પણ આ બાબતો પુરી શીખી શકાતી નથી.

તમે માત્ર આ પુસ્તકનો અભ્યાસ કરવાથી માત્ર છ મહિનામાં જ ઉપરની તમામ બાબતો લખતાં, જોલતાં અને વાંચતાં શીખી શકશો. આજોનાં તેમ મોડી ઉમરના માણસોને પણ ઉપયોગી છે. વળી આ બાબતોનો કમ એવો રાખેલો છે કે દરેક બાબત અટકાવ રહી શકે. એક બાબતો અભ્યાસ કરતાં ત્રણ ચાર બાબતો સામટી આવડી શકે. આ પુસ્તક છપાવતાં પણ ખર્ચ અને મહેનત પડી છે. તેના અભ્યાસ કરવાથી જ ખાતરી થશે. કીમત માત્ર રૂ. ૧૦-૦-૦ હાલ તરતમાં મંગાની લેનાર પાસે માત્ર રૂ. ૭-૦-૦ લેવાશે.

આ પુસ્તક વડોદરા રાજ્યની લાયબ્રેરીઓ ખાટે મળુર થયું છે.

આ પુસ્તકનો લાભ મેળવનારા શું કહે છે તે વાંચો.

સુરતથી કવચનકાલ હીરાલાલ લખે છે કે: માસ્તર ઓફ નોલેજ મળ્યું. ઘણાં લાંબા સમયથી તે પુસ્તક મેળવવા મારી તીવ ધનજી હતી એટલે તે પ્રાપ્ત થતાં અચ્છી ધિતિ અવલોકન કરી ગયો અને તેથી અને આનંદ થયો. પુસ્તકની શૈલી, બાબતો શીખવાના ઉમેદવારને ઘણી સુગમ પડે તેવી છે. તેમજ જુદાં જુદાં પુસ્તકો વસાવી જુદી જુદી બાબતો શીખવાને લાંબો પરિશ્રમ કરવા કરતાં જે આ પુસ્તકથી જ શીખવામાં આવે તે ઘણાં ટુંકા સમયમાં તેમજ થોડી મહેનતે તે બાબતોનું જ્ઞાન થાય એ નિઃશંક છે. વળી એ પણ નિર્વિવાદ છે કે આપે જે જે બાબતોની પસંદગી કરી છે તે હાલના સમયવાત્સર ઉપયોગી જ છે. વળી આપે અંગ્રેજી, મરાઠી, ગુજરાતી અને હિંદીની રચના બેગી આપી છે તેથી દરેક બાબતો જુદીજુદી શીખવાની મહેનત પણ આપે ટાળી છે ટુંકમાં તે પુસ્તક પણ ઉપયોગી હોય સાહિત્ય પ્રેમી વધુએને બીજી બાબતોમાં રહેલા સાહિત્ય ગીતનું પાન કરવામાં એક શ્રેષ્ઠ સમાન થઈ પડશે એવી આશા સાથે વિરમું છું.

મુંબઈથી સુદરદાસ લખે છે કે: આપનું માસ્તર ઓફ નોલેજ મળી સારા જ્ઞાનની આપણોને અર્થ સારે તેમ છે. વળી વગર માસ્તર શીક્ષણ દરેક બાબતનું લખ શકાય તેમ પણ છે તે દરેક ક્ષેત્રમાં સંગ્રહવાને લલામણુ કરીએ છીએ.

પુસ્તકની કીમત માત્ર રૂ. ૧૦-૦-૦ છે છતાં હાલ મંગાની લેનારને માત્ર રૂ. ૭)માં મળશે.

ખાંડવાથી અબ્દુરહેમાનખાન ખાખા ચાખલા એસ્ટેટવાળાં લખે છે કે:-આપનું માસ્તર ઓફ નોલેજ નામનું પુસ્તક મે વાંચ્યું છે, જુદી જુદી બાબતોનું જ્ઞાન મેળવવા એ પુસ્તક મદદગર થાય તેમ છે. તેની રચના પણ નવા શીખાઉને સહેલી પડે તેવી છે, વળી આ પુસ્તકદારા જે લાભ લઈ શકાય તેના મુકામલામાં તેની કીમત માત્ર નામની જ કહેવાય.

ભાચથી સાકરલાલ માધવલાલ તોરાવાલા લખે છે:-માસ્તર ઓફ નોલેજ એ પુસ્તક ખરેખર બાબતોની ઉત્કંઠા ધરાવનાર મનુષ્યોને ખાટે માર્ગદર્શક બોમીયા તરીકે અતિ ઉપયોગી છે. આપે અશ્રમ શ્રમ વેડી આવા અમુલ્ય પુસ્તકની બક્ષીસ ગુજરાતને સમર્પણ કરી તે બદલ ખરેખર તમને ધન્યવાદ આપ્યા વિનાય શું કરીએ? વધુમાં આપના પુસ્તકનો ઉદ્ભવ સારી રીતે થાય અને તેથી આપની અમુલ્ય મહેનત સફળ થાય એવું ધન્યું છું.

વ્યવસ્થાપક ભાગ્યેદય અમદાવાદ

१४-खुले हुये-नहीं दके हुये वर्तनमें अन्न भलीभांति नहीं पकता है ।

१५-धर्म, अर्थ और कामकी शुद्धि और दुर्जनोका स्पर्श ही स्नानका कारण है ।

१६-निरंतर सेवने योग्य सुखके लिये उत्तम वचनोंका प्रिय मधुर सरस रूप प्रयोग और ताम्बूलका भक्षण ये दो ही पदार्थ हैं ।

१७-निरंतर बैठनेवालेका उदर बड़ जाता है, मन वचन और शरीरमें शिथिलता बढ़ जाती है ।

१८-अत्यंत खेद मनुष्यको असमयमें बृद्ध बना देता है ।

१९-देव गुरु और धर्म नहीं माननेवाले पुरुषका विश्वास उठ जाता है ।

२०-आत्मसुखके अनुरोधसे कार्य करनेके लिये रात्रि और दिनका विभाग बनालेना आवश्यक है ।

२१-कालके अनियमसे काम करना मरनेके बराबर है ।

२२-अत्यन्त आवश्यक कार्यमें कालको व्यर्थ व्यतीत मत करो ।

२३-आत्म रक्षामें कभी भी प्रमाद करना उचित नहीं है ।

२४-पूजनीय और सेवनीयको उठ कर नमस्कार करो ।

२५-देव गुरु और धर्मके कार्योंको अपने आप देखो ।

२६-पर स्त्रीके साथ और माता बड़िनके साथ एकांतमें मत रहो ।

२७-विना अधिकारके और संमति राज-

समामें प्रवेश मत करो ।

२८-संध्याओंमें, दिनमें, जलमें, देवायतनोंमें मैथुन करना वर्जित है ।

२९-पर्वके दिनोंमें उपद्रव आनेपर भी कुलीन स्त्रीके साथ सहवास मत करो ।

३०-स्वतंत्र रहना मनुष्योंको सुखके लिये उत्तम रसायन है ।

३१-स्त्रियोंका स्वतंत्र रहना चारित्र्यका नाशक है ।

३२-लोभ, प्रमाद और अचानक विश्वाससे जब स्वयं बृहस्पति तक भी ठगे जाते हैं तब दूसरे पुरुषोंकी तो बात क्या है ?

३३-कुलके वनुकूल ही पुरुषका स्वभाव होता है ।

३४-सरोग दशामें ही धर्ममें बुद्धि मनुष्योंकी गायः होती है ।

३५-निरोग वही है जो विना किसीकी प्रेरणासे वा उपदेशसे धर्मको चाहता है वा करता है ।

३६-व्याधिसे कुंखित पुरुषके लिये धैर्यको छोड़कर दूसरी औषधि नहीं है ।

३७-संपारमें भाग्यशाली मनुष्य वही है जिसका जन्म किसी प्रकारके कुत्सित दोषोंसे सहित नहीं हुआ है ।

३८-भयके स्थानोंमें धैर्यका धारण ही भयके दूर करनेका उपाय है, विषाद करना उपाय नहीं है ।

३९-धूपसे संतप्त मनुष्यके जलमें प्रवेश करनेसे आंखोंमें कमजोरी और मस्तकमें पीड़ा होती है ।

(अर्ण)

ऐतिहासिक व तुलनात्मक दृष्टिसे आर्यजित शैलीपर
रचा हुआ बिलकुल नवीन



भगवान् महात्मार्य

अथवा संक्षिप्त जैन इतिहास

लेखक—बाबू कामताप्रसाद जैन, स० संपादक "वीर"

संशोधक—ब्र० शीतलप्रसादजी व बेरिस्टर चंपतरायजी ।

तुर्त ही मगाईये। उत्तम छपाई सफाई, पुष्ट कागज, मनोहर जिल्द
पृ० ३०० व मूल्य १।।।) पौने दो रुपये मात्र ।

मैनेजर, दिगम्बर जैन पुस्तकालय—सुरत ।

पूज्य ब्र० सीतलप्रसादजी कृत—

तत्त्वमाला अथवा

जिनैन्द्रमतदर्पण दूसरा भाग

तीसरीवार छपकर अभी ही तैयार होगया ।
जैनधर्मका सुलभतासे सामान्य ज्ञान होनेके लिये
यह ग्रन्थ अवश्य २ मगाईये व विशेष मंगाकर
आंटिये । पृ० १०० व मूल्य छह आने व
२९) सैंकड़ा ।

मैनेजर दि० जैन पुस्तकालय—सुरत ।

उदयपुरमें—ब्र० पं० कन्हैयालालनीने चातु-
र्मास किया है इससे अच्छी धर्मप्रभावना हो
रही है व अनेक प्रकारके व्रत विधान हो रहे
हैं व इन्द्रध्वज मंडल विधान भी हो रहा है ।

बिलकुल नये ग्रन्थ ।

चौबीस जिन पंचकल्याणक पाठ—भाषा
पूजा—२४ तीर्थकरोंके समी कल्याणकोंकी

अ० १२१ पूजाओंका संग्रह ॥—)

तत्त्वार्थ सूत्रजी टीका—

मृद व सदासुखनीकृत भाषा ।)

अग्रवाल इतिहास—

ब्र० बिहार लाल बुलंदशहरी कृत ॥)

महात्मा गांधी और आर्यसमाज ॥)

हरिबंशपुराण त्रिकने कागन खुले पृ. ८०० ८)

पद्मपुराण (जैन रामायण) नाटक २)

पंचमेरु व नंदीश्वर पूजन विधान(वडा) ॥—

शील महिमा नाटक ॥)

पूजा:—दिगम्बर जैन पुस्तकालय—सुरत ।

"जैनविजय " प्रिन्टिंग प्रेस खपाटिया चकला—सुरतमें मूलचंद्र किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया
और "दिगम्बर जैन" आफिस, चंदावाड़ी—सुरतसे उन्होंने ही प्रकट किया ।